केवल आप के लिये
गांव–गांव शहर–शहर देश दुनियां में अपनों तक पहुंचाना है तो :भारतीय बस्ती दैनिक वेब
www.bhartiyabasti.com
और उसका छपा संस्करण
सबसे बेहतर माध्यम
सम्पर्क- bhartiyabasti@gmail.com
मो0 9450567450| 9336715406

दैनिक
भारतीय बस्ती

भारतीय बस्ती
www.bhartiyabasti.com
के लिये विज्ञापन बुक कराये।
विचार, प्रचार का सशक्त माध्यम
सम्पर्क
मो0 9336715406
8400925463

भारतीय बस्ती आमंत्रण मूल्य 2रूपया

R.N.I. 38784/81 डाक पंजीकरण सं0 B.S.T 59 बस्ती, वर्ष :47 अंक 239 बुधवार 25 मार्च 2026 (बस्ती संस्करण) बस्ती एवं अयोध्या–फैजाबाद से एक साथ प्रकाशित पृष्ठ :4मूल्य:3.00 रुपया www.bhartiyabasti.com

एक नजर

नशे के धंधे में मां बेटा गिरफ्तार

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। न्याय मार्ग स्थित एक फोटो कॉपी के दुकान की आड़ में संचालित हो रहे नशे के कारोबार का पुलिस ने 22 मार्च को भंडाफोड़ करते हुए 113 ग्राम स्मैक व एक लाख रुपए नगद के साथ मां व उसके दो बेटों को गिरफ्तार किया था, पुलिस की यह कार्यवाई क्षेत्र में चर्चा का विषय बन गई है।

एसपी यशवीर सिंह ने इसके पीछे के नेटवर्क को तलाशने के लिए विशेष टीम लगाई है।

पुलिस ने जिन मां बेटों को गिरफ्तार किया था उनके नाम दीपक कुमर (24), शिवांश गुप्ता (21) और राज कुमारी देवी उम्र (50) वर्ष है।

विभागवार बजट आवंटन की समीक्षा

–भारतीय बस्ती संवाददाता

बस्ती । उत्तर प्रदेश विधान परिषद की वित्तीय एवं प्रशासकीय विलम्ब समिति की समीक्षा बैठक अध्यक्ष वित्तीय विलम्ब समिति डा. रतनपाल सिंह की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में सम्पन्न हुयी। बैठक में बस्ती मंडल के अंतर्गत जनपद बस्ती एवं संतकबीरनगर के जिलाधिकारी बस्ती श्रीमती कृत्तिका ज्योत्स्ना, संतकबीर नगर के आलोक कुमार, पुलिस अधीक्षक डा. यशवीर सिंह, संतकबीर नगर के संदीप कुमार मीना, मुख्य विकास अधिकारी सार्थक अग्रवाल, जयकेश त्रिपाठी तथा संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे और विभागवार बजट आवंटन एवं व्यय की स्थिति की प्रगति रिपोर्ट पर विस्तृत प्रस्तुतिकरण दिया।

बैठक के दौरान समिति के सदस्यों द्वारा दिसम्बर 2025 तक स्वीकृति बजट के सापेक्ष व्यय धनराशि तथा विभागवार संचालित विभिन्न विकास योजनाओं की गहन समीक्षा की गई। अधिकारियों ने समिति को अवगत कराया कि विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत कितनी धनराशि आवंटित की गई, उसके सापेक्ष कितना व्यय किया गया तथा किन–किन कार्यों को धरातल पर पूर्ण कराया गया। साथ ही योजनावार एवं वर्षवार शेष धनराशि का भी विस्तृत ब्यौरा प्रस्तुत किया गया।

अध्यक्ष वित्तीय विलम्ब समिति डा. रतनपाल सिंह, समिति के सदस्य विधान परिषद विजय बहादुर पाठक, हरि प्रताप सिंह, संयुक्त सचिव एवं समिति अधिकारी सर्वेश चन्द्र गुप्ता, निजी सचिव सभापति मनोज कुमार, समीक्षा अधिकारी अभय सिंह ने योजनाओं के क्रियान्वयन की गुणवत्ता, पारदर्शिता एवं समयबद्धता पर विशेष बल देते हुए अधिकारियों को निर्देशित किया कि विकास कार्यों में किसी प्रकार की लापरवाही न बरती जाए। उन्होंने कहा कि ग्राम पंचायत स्तर पर संचालित योजनाएं सीधे ग्रामीण जनता से जुड़ी होती हैं, अतः इनका प्रभावी एवं गुणवत्तापूर्ण क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जाना अत्यंत आवश्यक है।

समिति ने यह भी निर्देशित किया कि योजनाओं के क्रियान्वयन में पारदर्शिता बनाए रखने हेतु नियमित मॉनिटरिंग की जाए तथा कार्यों की गुणवत्ता की समय–समय पर जांच कराई जाए। उन्होंने कहा कि शासन की मंशा के अनुरूप योजनाओं का लाभ पात्र व्यक्तियों तक समय से पहुंचना चाहिए।

बैठक में एडीएम प्रतिपाल सिंह चौहान, संतकबीर नगर के जय प्रकाश, सीएमओ डा. राजीव निगम, सीआरओ कीर्ति प्रकाश भारती, डीडीओ अजय कुमार सिंह, पीडी राजेश कुमार, मुख्य कोषाधिकारी अशोक कुमार प्रजापति, डीसी मनरेगा संजय शर्मा, सहित संबंधित दोनों जिलों के अधिकारीगण उपस्थित रहें।

युद्ध जारी, ट्रंप ने मोदी को किया फोन

नयी दिल्ली (आभा)। मिडिल ईस्ट में जारी तनाव के बीच एक बड़ी खबर सामने आई है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने पीएम मोदी से बात की है। भारत में अमेरिकी राजदूत सर्जियो गोर ने बताया कि राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से फोन पर बातचीत की है। दोनों नेताओं के बीच हुई इस चर्चा में मध्य पूर्व की वर्तमान स्थिति पर विस्तार से विचार–विमर्श किया गया, जिसमें होर्मुज जलडमरूमध्य को खुला और सुरक्षित रखने के महत्व पर भी जोर दिया गया। राजदूत गोर ने इस बातचीत को दोनों देशों के बीच मजबूत दोस्ती का प्रतीक बताया।

ट्रंप से बातचीत के बाद पीएम मोदी ने सोशल मीडिया एक्स पर लिखा भारत पश्चिम एशिया में तनाव कम करने और जल्द से जल्द शांति बहाल करने का समर्थन करता है। बातचीत में हार्मुज जलडमरूमध्य को खुला, सुरक्षित और सभी के लिए सुलभ बनाए रखने की आवश्यकता पर जोर दिया, क्योंकि यह पूरे विश्व के लिए बेहद महत्वपूर्ण है। इस दौरान दोनों नेताओं ने शांति और स्थिरता की दिशा में चल रहे प्रयासों पर नियमित संपर्क बनाए रखने पर सहमति जताई। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि भारत क्षेत्र में शांति स्थापना के हर प्रयास में सकारात्मक भूमिका निभाने के लिए तैयार है।

दोनों नेताओं की यह बातचीत उस दिन हुई है जब एक दिन पहले अमेरिकी राष्ट्रपति ने मध्य पूर्व में शत्रुता के पूर्ण और समग्र समाधान के संबंध में बेहद अच्छी और रचनात्मक बातचीत होने का दावा किया था। राजदूत गोर का एक्स पोस्ट ब्रिटिश अखबार फाइनेंशियल टाइम्स की उस खबर के कुछ घंटे बाद आया, जिसमें दावा किया गया है कि पाकिस्तान खुद को अमेरिका–इजरायल–ईरान युद्ध को सुलझाने में प्रमुख मध्यस्थ के रूप में स्थापित करने की कोशिश कर रहा है।

अधिकारियों ने किया जेल का निरीक्षण

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। जिला जज, जिलाधिकारी कृत्तिका ज्योत्स्ना और पुलिस अधीक्षक यशवीर सिंह ने मंगलवार को जिला कारागार बस्ती का आकस्मिक निरीक्षण किया। इस दौरान अधिकारियों ने जेल अधीक्षक की उपस्थिति में कारागार परिसर की विभिन्न व्यवस्थाओं का गहन जायजा लिया।

निरीक्षण के दौरान, अधिकारियों ने जेल के बैरकों, अस्पताल और मेस सहित अन्य महत्वपूर्ण स्थानों का दौरा किया। उन्होंने कैदियों से सीधे बातचीत कर उनकी समस्याओं और उपलब्ध सुविधाओं के बारे में जानकारी ली। अधिकारियों ने यह सुनिश्चित करने पर विशेष जोर दिया कि कैदियों को निर्धारित मानकों के अनुसार सभी आवश्यक सुविधाएं मिल रही हैं।

क्षय रोग से मुक्ति के लिये जारी है अभियानः जागरूकता कार्यक्रम में दिया जानकारी

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। विश्व क्षय रोग दिवस पर राष्ट्रीय क्षय उन्मूलन कार्यक्रम एवं मां गायत्री फाउंडेशन द्वारा सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र साऊँघाट के सहयोग से ग्राम पंचायत पटखौली में जन जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। लोगों को क्षय रोग के लक्षण, कारण एवं बचाव के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। अध्यक्षता फाउंडेशन के प्रबंधक नीरज पाण्डेय ने किया।

मुख्य अतिथि क्षय रोग विभाग के डी.आर.टी.बी.कॉर्डिनेटर संदीप श्रीवास्तव ने कहा कि क्षय रोग का समय पर पहचान हो जाए तो इलाज पूरी तरह संभव है। बी.सी.सी. टीम लीडर देवेन्द्र प्रताप ने टी. बी. के विभिन्न प्रकार बारे में जानकारी दी। स्वास्थ्य अधीक्षक डा. शशि कुमार ने कहा कि टी. बी. उन्मूलन कार्यक्रम पर वृहद रूप से चलाया जा रहा है। भारत सरकार की तरफ से चलाए गए 100 दिन के विशेष कार्यक्रम में स्वास्थ्य टीम ग्राम स्तर पर सघन जांच कर रही है, चिह्नित मरीजों को इलाज की हर सुविधा प्रदान कर रही है।

फाउंडेशन की अध्यक्ष सुप्रिया पाण्डेय ने कहा कि संस्था टी. बी. उन्मूलन कार्यक्रम पर स्वास्थ्य विभाग के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य कर रही है।

कार्यक्रम में अमित कुमार, सी. एच.ओ. अंकिता वर्मा, ए. एन. एम. मीरा सिंह, सुमित्रा चौधरी, आशा बहू संगीता, ज्ञानमती, कुसुम, नीलू शुक्ला, आंगनबाड़ी कार्यकर्त्री सुनीता यादव, माधुरी, मनोज मिश्रा और ग्रामवासी उपस्थित रहे।

तैयारियां पूरीः चैत्र रामनवमी पर हियुवा की भव्य शोभा यात्रा 26 को

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। मंगलवार को हिन्दू युवा वाहिनी की बैठक न्याय मार्ग स्थित जिला कार्यालय पर अध्यक्ष शशिभूषण सिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में आगामी 26 मार्च को चैत्र रामनवमी को निकाली जाने वाली भव्य शोभा यात्रा की तैयारियों को अंतिम रूप दिया गया।

हिन्दू युवा वाहिनी के जिला महामंत्री विनय सिंह ने बताया कि 26 मार्च के सायं 5 बजे कम्पनीबाग स्थित शिवमंदिर के निकट कमल टेण्ट हाउस पर एकत्रीकरण होगा। यहां से शोभा यात्रा शहर के विभिन्न मार्गो से होते हुये मारवाडी मंदिर पुरानी बस्ती तक जायेगी। गांधीनगर स्थित श्री हनुमान मंदिर पर विशेष अनुष्ठान आयोजित किया गया है। शोभा यात्रा में रथ, घोड़ा, देवी देवताओं की झांकिया, अखण्ड ज्योति आदि सम्मिलित होंगे। तैयारी बैठक में मुख्य रूप से जिला संयोजक बब्लू निषाद, महामंत्री कन्हैयालाल, जय प्रकाश सिंह, धर्मेन्द्र कुमार, विजय द्विवेदी, यशवन्त सिंह, रवि सिंह, अनिल मिश्र, दिनेश सिंह, वृजेन्द्र चौधरी, राजेन्द्र निषाद, अजय श्रीवास्तव, विवेक सिंह, अजय कन्नौजिया, प्रवीन सिंह के साथ ही हियुवा के अनेक पदाधिकारी, कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

शिवसेना ने किया गौशालाओं की स्थिति सुधारने की मांगः सौंपा ज्ञापन

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। मंगलवार को शिवसेना यूबीटी जिलाध्यक्ष इं. रुपेन्द्र श्रीवास्तव के नेतृत्व में शिव सैनिकों ने मुख्य विकास अधिकारी को सम्बोधित 3 सूत्रीय ज्ञापन जिलाधिकारी के प्रशासनिक अधिकारी को सौंपा। मांग किया कि गौ माता से सम्बन्धित समस्याओं का प्राथमिकता से समाधान कराया जाय।

ज्ञापन देने के बाद इं. रुपेन्द्र श्रीवास्तव ने कहा कि जनपद में गौशालाओं में रह रहे गोवंश की खाने–पीने, दवा, रखरखाव आदि की समुचित व्यवस्था न होने की दशा में गाय, बैल व बछड़े आदि असमय प्राण त्याग रहे हैं। बीमार पशुओं के लिये न तो दवा है, न खाने–पीने की चारा एवं पानी भी नहीं है। जिससे गोवंश तड़प–तड़पकर भूखे मर रहे हैं। जबकि प्रशासन द्वारा सारी व्यवस्थाओं का दावा किया जा रहा है। कहा कि गौशाला कोइलपुरा, सोधिया घाट पिडवाल, कान्हा गौशाला बस्ती, छेड़िहा, अजमतपुर, घुक्सा आदि गौशालाओं में दयानीय स्थिति है। न कोई कर्मचारी है, न कोई व्यवस्था है। सरकारी दावे सिर्फ खोखले साबित हो रहे है। मांग किया कि गौशालाओं की स्थिति सुधारा जाय।

तीन सूत्रीय ज्ञापन में कहा गया है कि छुट्टा घूम रहे ग्राम सभा में पशुओं की जिम्मेदारी सम्बन्धित बीडीओ, ग्राम प्रधान व सचिव को दिया गया है किन्तु सरकार के मंशा के अनुरूप गौशालाओं में व्यवस्था नहीं की जाती। छुट्टा पशुओं के कारण किसानों की फसल बर्बाद हो रही है। यह जानकारी देते हुये मीडिया प्रभारी सूरज कुमार शुक्ल ने बताया कि ज्ञापन देने वालों में जिला महासचिव आनन्द त्रिपाठी, जिला उप प्रमुख शिवम प्रताप सिंह, आदित्य सिंह आदि शामिल रहे।

बसपा के मण्डल स्तरीय समीक्षा बैठक में बनी त्रिस्तरीय पंचायत और विधानसभा चुनावों की रणनीति

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती । बहुजन समाज पार्टी की मण्डल स्तरीय समीक्षा बैठक मंगलवार को बड़े बन के निकट स्थित एक मैरेजहाल के सभागार में मुख्य मण्डल प्रभारी धर्मदेव प्रियदर्शी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई।

मुख्य अतिथि एवं बस्ती, गोरखपुर, बनारस, प्रयागराज के मण्डल प्रभारी पूर्व राज्यसभा सांसद घनश्याम चन्द्र खरवार ने कहा कि बसपा पूरी ताकत से संगठन को मजबूत करने में जुटी है। बूथ और सेक्टर की प्रभावी तैयारी और उनकी समीक्षा कर लिया जाय, आगामी त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव और विधानसभा चुनाव की तैयारियां तेज कर दी जाय। मुख्य मण्डल प्रभारी उदयभान, केके. गौतम, कल्पनाथ बाबूजी, राम सूरत चौधरी, संजय दूसिया आदि ने कहा कि संगठन की मजबूती से ही बहन सुश्री मायावती के संकल्प साकार होंगे। इसके लिये जमीनी धरातल पर कार्यकर्ता और पदाधिकारी जुट जाय और पार्टी की विचारधारा से लोगों को जोड़े। जनपद के सभी विधानसभा के बूथों की समीक्षा के साथ यह सुनिश्चित कर लिया जाय कि कोई मतदाता वंचित न रहने पाये।

बस्ती जिलाध्यक्ष जयहिन्द गौतम ने कहा कि मण्डलीय समीक्षा बैठक में जो निर्णय लिये गये हैं उस अनुरूप संगठन को और मजबूत किया जायेगा। इस मौके पर कैप्टन कृष्ण चन्द्र पाठक, रामकिशोर पाठक, विजय पाण्डेय, संजय पाण्डेय, सुशील शुक्ल, सुनीता दूबे, राधिका तिवारी, सुनीता पाठक, सत्यनरायन मिश्र, विजय पाण्डेय, अभिनव तिवारी, दीपक मिश्र, कुलदीप दूबे, दीपक चौधरी, सोनू शुक्ल, शुभम मिश्र, मनीष शुक्ल, अमन पाण्डेय, प्रवीन कुमार पाण्डेय, रामरंग सिंह, सर्वजीत सिंह, अनिल सिंह, संजय सिंह, राम सिंह, विजय कुमार सिंह, जितेन्द्र प्रताप सिंह, राजन सिंह, अरून सिंह के साथ ही सैकड़ों की संख्या में लोगों ने बसपा की सदस्यता ग्रहण किया।

मण्डल स्तरीय समीक्षा बैठक में मुख्य रूप से संतकबीर नगर जिलाध्यक्ष झिनकान प्रसाद, सिद्धार्थनगर के जिलाध्यक्ष दिनेश कुमार गौतम, विधानसभाध्यक्ष नवमी प्रसाद, देशराज गौतम, राजीव राव, भूपेन्द्र कुमार, प्रदीप कुमार गौतम, लोकसभा के पूर्व प्रत्याशी लवकुश पटेल, राजुमार आर्य, सीताराम शास्त्री, बनवारीलाल कन्नौजिया, रमेश कुमार शुक्ल, प्रेमचन्द्र पाठक, विजय प्रताप सिंह, नदीम, इन्द्रजीत गौतम, जब्बार अली के साथ ही राजेन्द्र कुमार गौतम, अवनीश कुमार, अभिषेक भारती, यशवन्त निगम, दीपक कुमार, राजेश प्रताप सिंह, अतर सिंह गौतम, के.सी. मौर्या, रामकरन गौतम, अतर सिंह गौतम, बच्चूलाल, अनिल कुमार गौतम, राम सरोज, महेन्द्र कुमार, अखिलेश कुमार, प्रिन्स कुमार निगम, रामचेत निराला, राम सरोज, राना अम्बेडकर, के.पी. राठौर, प्रमोद कुमार, विनय अम्बेडकर, आशुतोष सिंह, अलीम अहमद, अनूप कुमार, भूपेन्द्र कुमार, अन्सार हुसेन अंसारी, अश्विनी कुमार गौतम,, राजेश कुमार चौधरी, शैलेन्द्र चौधरी, रामकेश राना के साथ ही बसपा के अनेक पदाधिकारी, कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

एडीएम के साथ ट्रक संचालकों की बैठक विफलः टोल प्लाजा से मनमानी वसूली के विरोध में एसोसिएशन ने दिया आन्दोलन की चेतावनी

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती । जनपद में टोल प्लाजा से मनमानी वसूली के खिलाफ अब ट्रक संचालकों का गुस्सा खुलकर सामने आ गया है। मंगलवार को ट्रक एसोसिएशन के पदाधिकारियों की बैठक अपर जिला अधिकारी (एडीएम) की अध्यक्षता में हुई, लेकिन इस बैठक में भी समस्या का ठोस समाधान नहीं निकल सका। बैठक में टोल प्लाजा मैनेजर, अपर पुलिस अधीक्षक, क्षेत्राधिकारी बस्ती सदर और यातायात निरीक्षक मौजूद रहे, बावजूद इसके ट्रक संचालकों का आक्रोश कम होता नहीं दिखा।

बैठक में आखिरकार जो निर्णय निकला, वह भी ट्रक संचालकों को पूरी तरह संतुष्ट नहीं कर सका। एडीएम की बैठक में सिर्फ इतना तय हुआ कि मड़वानगर टोल प्लाजा पर ट्रकों से आधा टोल शुल्क लिया जाएगा। एसोसिएशन का कहना है कि यह "जख्म पर मरहम नहीं, बल्कि औपचारिकता" भर है।

बैठक के दौरान ट्रक एसोसिएशन के अध्यक्ष राजकुमार सिंह ने साफ शब्दों में कहा कि जिले में टोल प्लाजा के नाम पर "खुली लूट" हो रही है। उन्होंने आरोप लगाया कि वाहन स्वामियों से नियमों के खिलाफ जबरन वसूली की जा रही है और प्रशासन मूकदर्शक बना हुआ है। उन्होंने बैठक में सवाल उठाया कि आखिर एक ही जिले में दो–दो टोल वसूली कैसे जायज हो सकती है। राजकुमार सिंह ने कहा कि महज 30 किलोमीटर के अंदर दो टोल प्लाजा स्थापित कर दिए गए हैं, जो कि पूरी तरह नियमों के विपरीत है। इससे ट्रांसपोर्टरों और व्यापारियों पर दोहरा आर्थिक बोझ पड़ रहा है।

एसोसिएशन ने यह भी आरोप लगाया कि टोल प्रशासन ने सभी वैकल्पिक रास्तों और कटों पर बैरिकेडिंग कर दी है, जिससे वाहनों को जबरन टोल प्लाजा से होकर गुजरने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है। उन्होंने इसे "जबरन वसूली की साजिश" बताते हुए कहा कि यह सीधे– सीधे नियमों और जनता के अधिकारों का उल्लंघन है।

ट्रक एसोसिएशन के पदाधिकारियों ने बताया कि इस गंभीर मुद्दे को लेकर वे कई जनप्रतिनिधियों के पास भी जा चुके हैं। सदर विधायक महेन्द्रनाथ यादव, पूर्व विधायक रूधौली संजय प्रताप जायसवाल और सांसद राम प्रसाद चौधरी को भी पूरी स्थिति से अवगत कराया गया है। सभी ने समर्थन और समाधान का आश्वासन दिया, लेकिन अब तक जमीन पर कोई असर नहीं दिख रहा है। उन्होंने नाराजगी जताते हुए कहा कि पिछले 15 दिनों से वे लगातार अधिकारियों के चक्कर काट रहे हैं, लेकिन हर बार केवल आश्वासन ही मिलता है। इससे ट्रांसपोर्टरों में भारी रोष है और वे खुद को ठगा हुआ महसूस कर रहे हैं।

ट्रक एसोसिएशन ने दो टूक चेतावनी दी है कि यदि जल्द ही इस समस्या का स्थायी समाधान नहीं किया गया, तो वे बड़े स्तर पर आंदोलन करने को बाध्य होंगे। उन्होंने कहा कि यह लड़ाई केवल ट्रक संचालकों की नहीं, बल्कि पूरे व्यापारी वर्ग और आम जनता की है।

बैठक में दीपक सिंह अरविन्द कुमार गुप्ता अनुरोध सिंह महेश सिंह दीपक सिंह ठेकेदार प्रमोद यादव, संजय यादव, सुमित चौधरी, अवधेश कुमार, आशीष कुमार गुप्ता, विपुल त्रिपाठी आदि शामिल रहें।

सेन्ट्रल एकेडमी में परीक्षाफल का वितरणः मेधावियों को पुरस्कृत कर बढाया हौसला

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। सेन्ट्रल एकेडमी सीनियर सेकेन्डरी स्कूल में मंगलवार को नर्सरी से कक्षा 11 तक के छात्र–छात्राओं में परीक्षाफल का वितरण किया गया। निदेशक जे.पी. तिवारी, प्रधानाचार्य दीपिका, सहायक निदेशक अनुज तिवारी, अम्बुज तिवारी आदि ने छात्रों का उत्साहवर्धन करते हुये कहा कि जिन छात्रों के कम अंक आये हैं वे और अधिक परिश्रम करें। अधिकतम अंक अर्जित करने वाले छात्रों को मेडल, अंकपत्र, देकर पुरस्कृत किया गया।

नर्सरी में नित्या प्रथम, अर्सिया द्वितीय, अदिविका तृतीय, के. जी. में मान्या प्रथम, दिव्यांश, अस्तित्व द्वितीय, अलीना, प्रिशा तृतीय, प्रेप में शिवांश, निधि प्रथम, अरमान, आनवी द्वितीय, आयुष तृतीय, कक्षा 1 में अक्षित प्रथम, आयुष द्वितीय, वैष्णवी तृतीय, कक्षा 2 में सोनाक्षी प्रथम, रोहिका द्वितीय, ज्योति तृतीय, कक्षा 3 में आरूषी प्रथम, दिव्यांशी द्वितीय, चन्द्रपीड, श्रेष्ठ तृतीय, कक्षा 4 में नैना प्रथम, अर्थव द्वितीय, श्रद्धा तृतीय, कक्षा 5 में यशस्वी प्रथम, जनेरा द्वितीय, आदित्ति तृतीय, कक्षा 6 में प्रियांशी प्रथम, आर्यन द्वितीय, देवांश तृतीय, कक्षा 7 में एन्जल प्रथम, साक्षी द्वितीय, रवि तृतीय, कक्षा 8 में श्रेया प्रथम, अलका द्वितीय, अश्विनी तृतीय, कक्षा 9 में आराध्या प्रथम, कक्षा 11 में फरहान प्रथम, अमरनाथ द्वितीय, अभिज्ञान तृतीय स्थान पर रहे।

परीक्षाफल वितरण के अवसर पर निदेशक जे.पी. तिवारी ने कहा कि यह पूरा जीवन ही एक परीक्षा है। छात्रों को चाहिये कि वे पूरी मनोयोग से ज्ञानार्जन कर देश के सुयोग्य नागरिक बने। सेन्ट्रल एकेडमी सीनियर सेकेन्डरी स्कूल में सर्वांगीण विकास हमारी प्राथमिकता है। इस अवसर पर मुख्य रूप से आबिद अरशद, द्विजेन्द्र मिश्र, प्रियंका त्रिपाठी, ए.के. मिश्र, रानी, शिखा, श्रेया, द्विवेदी, अमित सिंह, अंजली, सुधा गौड़, शम्स परवेज, अंजली, रूचि आदि ने छात्रों का उत्साहवर्धन किया।

चैत्र नवरात्रि पर भव्य जागरण, विशाल भंडारा फलाहार में दिया मातृ शक्ति, भक्ति का संदेश

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। मंगलवार को नगर पंचायत भानपुर स्थित बैड़वा समय माता मंदिर परिसर में चैत्र नवरात्रि के छठवे दिन मंदिर ट्रस्ट के संयोजन में भव्य जागरण, विशाल भंडारा और फलाहार का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम में क्षेत्र के हजारों श्रद्धालुओं ने पहुंचकर माता रानी के दर्शन कर और भंडारे में प्रसाद ग्रहण किया।

कार्यक्रम के दौरान भक्ति गीतों और माता के जागरण से माहौल भक्तिमय बना रहा। श्रद्धालु माता के जयकारों के साथ भक्ति में लीन नजर आए। आयोजन स्थल को आकर्षक सजावट से सजाया गया था, जिससे पूरे क्षेत्र में उत्सव का माहौल दिखाई दिया।

मुख्य अतिथि पूर्व विधायक संजय प्रताप जायसवाल ने कहा कि ऐसे धार्मिक आयोजन समाज में एकता, श्रद्धा और संस्कृति को मजबूत करते हैं। उन्होंने मंदिर ट्रस्ट के सभी पदाधिकारियों को इस सफल आयोजन को सराहा। कहा कि मातृ शक्ति सर्व श्रेष्ठ है। मनोज सिंह ने कहा कि "चैत्र नवरात्रि का पर्व हमारी आस्था और परंपरा का प्रतीक है। इस अवसर पर जागरण और भंडारे का आयोजन कर हम सभी को एक साथ जोड़ने का प्रयास किया गया है। हमें खुशी है कि इतने बड़े स्तर पर श्रद्धालुओं की सहभागिता देखने को मिली, जिससे यह आयोजन सफल हुआ।"

मंदिर ट्रस्ट के प्रबंधक बलवंत सिंह ने बताया कि "हर वर्ष की तरह इस बार भी चैत्र नवरात्रि के अवसर पर भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। हमारा उद्देश्य श्रद्धालुओं को बेहतर व्यवस्था देना और धार्मिक माहौल बनाए रखना है। ट्रस्ट के सभी सदस्यों और क्षेत्रवासियों के सहयोग से यह आयोजन सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।"

बैड़वा समय माता मंदिर ट्रस्ट भानपुर, बस्ती के पदाधिकारियों में प्रबंधक बलवंत सिंह, अध्यक्ष विष्णु प्रताप सिंह, कोषाध्यक्ष हनुमंत सिंह, उपाध्यक्ष कमला सिंह सहित सदस्य मनोज सिंह, विकास सिंह, लल्लन सिंह, राजाराम तिवारी, वृजेश सिंह, रविप्रताप सिंह, बबलू सिंह एवं दीपू गैड़ा मौजूद रहे।

इसके अलावा कार्यक्रम में एस. डी.एम. भानपुर, रोली सिंह, विश्व हिन्दू महासभा के अध्यक्ष अखिलेश सिंह, जिलाजीत सिंह, अभिषेक त्रिपाठी, के.डी. पाण्डेय एवं बलराम सिंह सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

पूरे आयोजन के दौरान सुरक्षा एवं व्यवस्था के भी उचित इंतजाम किए गए थे, जिससे श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की असुविधा का सामना नहीं करना पड़ा। आयोजन के अंत में सभी श्रद्धालुओं ने प्रसाद ग्रहण कर कार्यक्रम को सफल बनाया।

"मुझे अखबार निकालने दो तो मैं इस बात की परवाह नहीं करता कि कौन धर्म का नियामक है और कौन कानून का निर्माता"—वेंडेल फिलिप्स

दैनिक
भारतीय बस्ती
बस्ती 25 मार्च 2026 बुधवार

सम्पादकीय

युद्ध और ट्रम्प के बदले सुर

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ईरान के पावर प्लांट और एनर्जी ठिकानों पर पांच दिनों तक हमला नहीं करने का ऐलान किया है। अगर वह अपनी इस बात पर कायम रहते हैं, तो 28 फरवरी से शुरू हुए मौजूदा युद्ध में यह सबसे सकारात्मक बात होगी। इससे यह छोटी—सी उम्मीद बंधती है कि होर्मुज स्ट्रेट पर ट्रंप के 48 घंटे वाले अल्टीमेटम के बाद जो युद्ध और तेज होता दिख रहा था, अब शायद उसमें थोड़ा ठहराव आए।

ट्रंप ने दावा किया है कि मौजूदा संकट को लेकर उनकी तेहरान के साथ बातचीत हुई है और यह बेहद सकारात्मक रही। ईरान की तरफ से ऐसी किसी बातचीत का खंडन आया है। हालांकि अगर वार्ता की थोड़ी—सी भी गुंजाइश बनती है, तो सभी पक्षों को उसे दोनों हाथों से थामना चाहिए। इस संकट का केवल एक ही हल है, बातचीत। ट्रंप अगर अपनी तरफ से भी हमलों में कमी लाते हैं, तो वार्ता का रास्ता खुल सकता है। पश्चिम एशिया के दूसरे देशों को भी इसमें अपनी भूमिका निभानी चाहिए।

दुनिया किस बेताबी से शांति की राह देख रही है, इसका अंदाजा इस बात से लगता है कि भले ही ट्रंप ने पूरी तरह से युद्धविराम नहीं किया, पर क्रूड ऑयल के दाम में 9: की कमी आ गई। उनका पावर प्लांट को निशाना नहीं बनाने का ऐलान, भले वह एकतरफा हो, इस मायने में अहम है कि लड़ाई के इससे तेज होने का खतरा थोड़ा कम हुआ है। अगर ईरान के पावर प्लांट तबाह होते हैं, तो बदले की जवाबी कार्रवाई से होने वाला नुकसान भयानक होगा।

अमेरिका—इस्राइल और ईरान जंग ने अप्रत्याशित हालात पैदा कर दिए हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोमवार को संसद में स्वीकार किया कि देश के सामने बड़ी चुनौती है। उन्होंने कहा कि हमने कोरोना के वक्त ऐसी चुनौती का सामना किया है, हमें उसी तरह तैयार रहना है। यह स्वीकारोक्ति अच्छी बात है। किसी भी संकट से निपटने का पहला पड़ाव उसे स्वीकार करना होता है। अब देश किस तरह से इस चुनौती का सामना कर सकता है, सरकार को यह स्पष्ट करना चाहिए। होर्मुज से होने वाले व्यापार, वहां से आने वाले फर्टिलाइजर्स, खाड़ी में मौजूद भारतीयों और उनके रेमिटेंस — सभी को लेकर चिंता है। पीएम ने अपने भाषण में इन सभी को संबोधित किया। ऊर्जा जरूरतों की आपूर्ति में डायवर्सिफिकेशन और घरेलू उत्पादन व स्ट्रैटिजिक रिजर्व को बढ़ाने जैसे कदम अहम हैं। यह देखना महत्वपूर्ण होगा कि युद्ध की दिशा क्या होगी।

खतरे में वन्य जीवों की जान

वन्य प्राणियों के संरक्षण के लिए देश भर में चिड़ियाघर और अभयारण्य बनाए गए हैं। मगर संरक्षित स्थलों पर भी सुरक्षा के पर्याप्त बंदोबस्त का अभाव कुछ वन्यजीवों की जान पर भारी पड़ रहा है। हाल ही में छत्तीसगढ़ के सरगुजा जिले में एक पशु बचाव केंद्र में आवारा कुत्तों के हमले में पंद्रह हिरणों की मौत की घटना ने वन्यजीवों की सुरक्षा को लेकर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। हैरत की बात है कि हिरणों को शिकार से बचाने के लिए जिस सुरक्षित स्थल पर रखा गया है, वहां आवारा कुत्तों ने ही सेंध लगाकर हमला कर दिया। कहा जा रहा है कि कुत्तों का झुंड बाड़े को तोड़कर अंदर घुस गया। इससे इस बात का अंदाजा लगाया जा सकता है कि वहां सुरक्षा व्यवस्था की स्थिति कैसी होगी। दूसरे, इस घटना ने संबंधित पशु बचाव केंद्र में तैनात कर्मियों की लापरवाही को भी उजागर किया है। सवाल है कि आवारा कुत्ते बाड़े को तोड़कर एक के बाद एक हिरण पर हमला करते रहे, तो वहां निगरानी का जिम्मा संभाले वनकर्मियों को इसकी भनक क्यों नहीं लग पाई।

यह बात छिपी नहीं है कि विभिन्न राज्यों में कई जगह चिड़ियाघर और वन्यजीव संरक्षण केंद्र तो स्थापित कर दिए गए हैं, लेकिन वहां न तो पर्याप्त कर्मियों की तैनाती की गई है और न ही पुख्ता सुरक्षा उपाय किए गए हैं। बाड़ों के बाहर निगरानी के लिए सीसीटीवी और अन्य तकनीकी प्रबंधों का भी अभाव देखा जाता है। जंगली जानवरों के बाड़े से बाहर निकलकर खुले जंगल में गायब हो जाने की खबरें भी अक्सर आती रहती हैं। इससे स्पष्ट है कि बाड़ों की सुरक्षा की नियमित निगरानी नहीं हो पाती है।

छत्तीसगढ़ की घटना भी इसी व्यवस्थागत खामी और लापरवाही की वजह से हुई है। वन विभाग ने संबंधित डिप्टी रेंजर और तीन वन रक्षकों को निलंबित कर दिया है, लेकिन क्या यह कार्रवाई काफी है? अक्सर यह देखा जाता है कि इस तरह की लापरवाही में निचले कर्मियों पर निलंबन की कार्रवाई करके मामले को रफा—दफा कर दिया जाता है। ऐसे मामलों में जब तक उच्च अधिकारियों की जवाबदेही तय नहीं की जाएगी, तब तक व्यवस्था में सुधार की उम्मीद नहीं की जा सकती।

इंटरनेट सेवाओं पर संकट के बादल

-डा. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा-

इंटरनेट की दुनिया अभी छह दशक भी पूरे नहीं कर पाई है कि बड़ी समस्या सामने आ गई है। इसमें कोई दो राय नहीं कि 1960 में जब जेसीआर लिकलाइडर ने वैश्विक नेटवर्क की कल्पना की थी उस समय यह सोचा भी नहीं होगा कि तीन से चार दशक में ही इंटरनेट संचार जगत में बड़ी क्रांति लाने में सफल हो जाएगा। अमेरिका—इजरायल व ईरान युद्ध के चलते अभी विश्व के देश ऊर्जा संकट का समाधान तो निकाल ही नहीं पा रहे कि डिजिटल सेवाओं के बाधित होने के भय से दुनिया के देशों की सरकारें की जान सांसत में आने लगी हैं। इंटरनेट आज प्रमुख आवश्यकताओं में से एक हो गया है। एयर लाइंस, बैंकिंग सेवाएं, संचार व्यवस्था जिसमें संवाद कायम करने से लेकर सभी तरह की डिजिटल सेवाएं, स्टॉक मार्केट आदि आदि बुरी तरह से प्रभावित होने की संभावनाओं को नकारा नहीं जा सकता। दरअसल जिस तरह से कच्चे तेल और एलपीजी आदि की दुनिया के देशों में सप्लाई हार्मुज जलडमरुमध्य के रास्ते होने और ईरान द्वारा इस रास्ते में अवरोध बनने से उर्जा संकट गंभीर रुप लेता जा रहा है। ठीक यही समस्या इंटरनेट को लेकर हो सकती है। कारण साफ है। युद्ध समाप्ति या यों कहें कि सीज फायर के आसार अभी तक बनते नहीं लग रहे तो दूसरी ओर ज्यों ज्यों एक दूसरे को नुकसान पहुंचाने के अधिक प्रयास होंगे तो ईरान हथियार के रुप में समुद्र में बिछी केबल्स को भी नुकसान पहुंचाने में कोई गुरेज नहीं करेगा। दुनिया के इंटरनेट ट्रैफिक का प्रमुख रास्ता भी यही है। एक मोटे अनुमान के अनुसार 20 प्रतिशत ट्रैफिक हार्मुज और लालसागर के रास्ते से गुजरता है। हार्मुज जलडमरुमध्य तो हालात यहां तक है कि सकरे स्थान पर तो मात्र 200 फीट की गहराई पर ही सबमैरिन केबल लाईने बिछी हुई है। लगभग यही हालात लालसागर के हैं। वहां भी इंटरनेट सेवाओं के लिए सबमैरिन केबल्स बिछी हुई है। ऐसा कयास लगाया जा रहा है कि ईरान द्वारा हार्मुज जलडमरुमध्य क्षेत्र में सुरंगे बिछाने का काम किया जा रहा है और इससे अन्य नुकसान होने के साथ ही फाइबर केबल्स के भी क्षतिग्रस्त होने की संभावनाओं से इंकार नहीं किया जा सकता। अफ्रिकांश प्रमुख सेवा प्रदाताओं ने इसी क्षेत्र में डेटा सेंटर स्थापित कर रखे हैं। जानकारों के अनुसार हार्मुज क्षेत्र से करीब 20 और लालसागर क्षेत्र से 17 केबल्स गुजरती है। 2024 में भी लाल सागर क्षेत्र में हूती हमलों के दौरान केबल प्रभावित हो चुकी है। वर्तमान हालातों में यदि सबमैरिन केबल्स प्रभावित भी होती है तो हालात जिस तरह के हैं उनमें प्रभावित केबल्स को ठीक करनों में महीनों ही क्या साल भी लग सकता है और ऐसे में दुनिया के देश एक नए संकट के दौर से गुजरने को मजबूर हो जाएंगे।

इंटरनेट की दुनिया अभी छह दशक भी पूरे नहीं कर पाई है कि बड़ी समस्या सामने आ गई है। इसमें कोई दो राय नहीं कि 1960 में जब जेसीआर लिकलाइडर ने वैश्विक नेटवर्क की कल्पना की थी उस समय यह सोचा भी नहीं होगा कि तीन से चार दशक में ही इंटरनेट संचार जगत में बड़ी क्रांति लाने में सफल हो जाएगा। 1969 में अमेरिकी रक्षा विभाग द्वारा एंडवास्ड रिसर्च प्रोजेक्टस एजेन्सी नेटवर्क के लिए विंट सर्फ और बॉब काह्न ने टीसीपीध्आईपी प्रोटोकाल विकसित किया। इंटरनेट की दुनिया में आमूलचूल बदलाव तो टिम बर्नर्स ली द्वारा डब्लूड्ब्लूड्ब्लू वर्ल्ड वाइड वेब विकसित किया तो इससे संचार दुनिया ही बदल गई। भारत में सही तौर पर तो 1995 में वीएसएनएल ने इंटरनेट सेवाओं का विस्तार किया। आज बड़ी समस्या यह है कि अमेजन, गूगल, माइक्रोसॉफ्ट आदि के विशाल डेटा सेंटर यूएई और सउदी आदि देशों में हैं। यही कारण है कि समुद्री रास्ते से फाइबर केबल्स भी हार्मुज जलडमरुमध्य व लालसागर होते हुए ही हैं। यदि केबल्स में व्यवधान होती है या किसी तरह से जाने अनजाने नुकसान पहुंचता है तो वीडियों काल, इमेल आदि से लेकर इंटरनेट से जुड़ी सभी तरह की सेवाएं प्रभावित हो सकती है और इसीको लेकर चिंता की लकीरें खिंचने लगी है।

वैसे आज संयुक्त राष्ट्र संघ तो बेमानी हो गया है। दुनिया के देशों के अलग अलग बने संगठन चाहे वे नाटो हो या ब्रिक्स या पिछले कुछ सालों के देश—दुनिया के हालातों में बेमानी हो गए हैं। वैश्विक हालात दिन प्रतिदिन बद से बदतर होते जा रहे हैं। ऐसे में सवाल यह उठता है कि कोई ना कोई ऐसी नियामक संस्था या कोई ना कोई इस तरह की बाध्यकारी व्यवस्था अवश्य होनी चाहिए जिससे दुनिया के देशों और उनके नागरिकों से जुड़ी सुविधाओं से छेड़छाड़ ना हो इस तरह की व्यवस्था किया जाना आवश्यक है। किसी भी देश या संगठन को इस तरह की सार्वभौमिक सेवाओं को बाधित करने से रोकने की व्यवस्था सुनिश्चित होनी चाहिए। क्योंकि दुनिया के देशों में कौन कब सिरफिरा नेता अपने अहम् की शांति के लिए दुनिया को संकट में ड़ाल दे इसकी संभावनाओं को नकारा नहीं जा सकता। आज ऊर्जा, पानी, स्वास्थ्य, डिजिटल दुनिया आदि आदि ऐसी सेवाएं है जिनके प्रभावित होने का असर समूची नहीं तो अधिकांश देशों पर पड़ता है और यह दुष्प्रभाव केवल देशों तक ही नहीं अपितु वहां निवास करने वाले करोड़ों नागरिकों पर सीधे सीधे पड़ता है। ऐसे में पूरी वैश्विक व्यवस्था को ही ठप्प करने वाले प्रयासों पर अंकुश या कारगर रोक लगाया जाना जरुरी हो जाता है। दो देशों के टकराव के चलते समूची दुनिया या दुनिया के अधिकांश देशों को संकट में नहीं ड़ाला जा सकता। दुनिया के देशों को इस दिशा में ठोस पहल करनी ही होगी।

बीजेपी ने चुन लिया नया योगी

—अभिनव आकाश —

संयासी का भगवा वस्त्र, हिंदू अस्मिता की बातें, मुस्लिम तुष्टीकरण के खिलाफ सीधी आवाज और राजनीति में कदम रखकर हिंदुओं की रक्षा का वादा। जब हम भारतीय राजनीति में भगवा और सत्ता के मिलन की बातें करते हैं तो सबसे पहला नाम उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का आता है। कारण सीधा सा है कि एक संयासी और मठ के प्रमुख से लेकर देश के सबसे बड़े सूबे के मुख्यमंत्री तक का सफर तय करके भारतीय राजनीति में हिंदुत्व की एक नई परिभाषा लिखी। अब ठीक वैसा ही प्रयोग भाजपा पश्चिम बंगाल के चुनावी समर में कर रही है। पश्चिम बंगाल की राजनीति में एक ऐसा नाम उभर रहा है जो योगी आदित्यनाथ की याद दिलाता है। ये नाम उत्पल महाराज का है। मूल नाम स्वामी ज्योतिर्मयानंद। वह भारत के सेवा आश्रम संघ के प्रमुख चेहरे रहे हैं। लेकिन अब उन्होंने संघ से निष्कासित होने के बाद भाजपा की टिकट स्वीकार कर ली है और वह उत्तर दिनाजपुर जिले की कालियागंज सीट से चुनाव लड़ रहे हैं। यह कोई छोटा फैसला नहीं है। भाजपा ने जानबूझकर इस चेहरे को चुना है।

उत्पल महाराज को टिकट देने का मुख्य कारण उनकी हिंदूवादी छवि और संगठनात्मक अनुभव है। वे भारत सेवाश्रम संघ के माध्यम से लंबे समय से लोगों की सेवा कर रहे थे। जिससे उनके स्थानीय स्तर पर जबरदस्त पकड़ है। भाजपा को उम्मीद है कि उत्पल महाराज के आने से ना केवल कालियागंज बल्कि आसपास की सीटों पर भी हिंदू मतदाताओं का भी भाजपा की ओर झुकाव होगा। अब जब भाजपा ने एक हिंदुत्ववादी नेता को टिकट दे ही दिया है तो सवाल उमड़ना लाजमी है कि क्या उत्पल महाराज बंगाल में पार्टी की हिंदुत्ववादी छवि के प्रमुख नेता बन सकते हैं? जैसे उत्तर प्रदेश में योगी आदित्यनाथ माने जाते हैं। तो इस सवाल का जवाब उत्पल महाराज के बयानों और भाजपा की रणनीति में मिलता है। जिस तरह से वे ममता बनर्जी सरकार पर हिंदुओं को हाशिए पर धकेलने का आरोप लगाते हैं उससे साफ है कि भाजपा उन्हें बंगाल में अपने सबसे बड़े हिंदूवादी चेहरे में से एक के रूप में पेश करना चाहती है।

हालांकि, बीते दिनों जारी एक आंतरिक पत्र में संघ ने राजनीति में उतरने के कारण उन्हें संघ से निष्कासित करने की घोषणा की। उत्पल महाराज ने इंडियन एक्सप्रेस को बताया कि उन्होंने संघ के अधिकारियों को चुनाव लड़ने के अपने निर्णय के बारे में सूचित कर दिया था, लेकिन जब वे सहमत नहीं हुए, तो उन्होंने अपनी उम्मीदवारी की घोषणा के एक दिन बाद, 17 मार्च को अपना इस्तीफा सौंप दिया, जिसे स्वीकार कर लिया गया। आपको शायद पता होगा कि स्वामी ज्योतिर्मयानंद राजनीति के जाल में फंस गए हैं, आश्रम छोड़कर एक राजनीतिक दल में शामिल हो गए हैं। यह खबर मिलते ही संघ के अधिकारियों ने मुख्यालय में शासी निकाय की आपातकालीन बैठक बुलाई और उन्हें निष्कासित करने का निर्णय लिया। भारत सेवाश्रम संघ पूरी तरह से गैर—राजनीतिक, सामाजिक सेवा और धार्मिक संगठन है। संघ के महासचिव स्वामी विश्वत्मानंद ने पत्र में लिखा किसी भी परिस्थिति में संघ का कोई संन्यासी, ब्रह्मचारी या आश्रम निवासी किसी भी राजनीतिक गतिविधि में शामिल नहीं हो सकता। उन्होंने आगे कहा कि यदि कोई व्यक्ति किसी राजनीतिक दल के प्रभाव या प्रलोभन में आ जाता है, तो उसका धार्मिक जीवन पूरी तरह नष्ट हो जाता है। यह उसे त्याग के गौरव से विमुख कर देता है और सांसारिक सुखों की लत में डुबो देता है३ जबकि हमें संसार के कल्याण के लिए काम करना चाहिए, सांसारिक ऐश्वर्य की ओर लौटने के लिए अपनी अंतरात्मा और वैराग्य का त्याग करना कभी भी उचित नहीं है।

दक्षिण दिनाजपुर जिले के बलुरघाट में जन्मे उत्पल महाराज ने बताया कि वे 2000 में इस संगठन में शामिल हुए और चार साल बाद स्थानीय कॉलेज से इतिहास में स्नातक की डिग्री पूरी की। उन्होंने कहा कि मैं बचपन से ही संन्यासी जीवन से बहुत प्रभावित था, क्योंकि मैंने आश्रम के छात्रावास में रहकर पढ़ाई की। तभी मैंने संन्यासी बनने का फैसला किया था। 1917 में स्थापित यह संघ राजनीति से दूर रहता है और परोपकारी कार्यों तथा आपदा राहत कार्यों में संलग्न रहता है, साथ ही यह देश भर में हिंदू मिलन मंदिरों का एक नेटवर्क भी संचालित करता है। उत्पल महाराज का दावा है कि इनका उद्देश्य हिंदुओं को एकजुट करना है। हिंदुओं की सेवा करते हुए मैंने महसूस किया कि राजनीति के कारण यह समुदाय खतरे में है। एक विशेष समुदाय को खुश करने की कोशिशों के कारण हिंदू पीड़ित हैं। आजकल रथ यात्रा या राम नवमी के अवसर पर पूजा—अर्चना करने के लिए भी हिंदुओं को पुलिस की विशेष अनुमति लेनी पड़ती है। हिंदुओं की समस्याओं का समाधान किसी आध्यात्मिक संगठन के माध्यम से नहीं किया जा सकता। तृणमूल कांग्रेस के पूर्व नेता हुमायूं कबीर और वरिष्ठ टीएमसी नेता फिरहाद हकीम की टिप्पणियों का जिक्र करते हुए उत्पल महाराज ने कहा कि मंदिरों में प्रार्थना करने का समय समाप्त हो गया है। उन्होंने कहा कि भले ही संघ ने उन्हें निष्कासित कर दिया हो, लेकिन वे इसे हमेशा अपने दिल और दिमाग में रखेंगे और संगठन के संन्यासियों के साथ संपर्क में रहेंगे। उन्होंने कहा कि मैं कालियागंज में रहता हूँ और इस इलाके की हर गली से वाकिफ हूँ। मैं यहाँ के लोगों को जानता हूँ और उनकी भावनाओं को समझता हूँ। वे कह रहे हैं कि उन्होंने कभी सोचा भी नहीं था कि मैं उम्मीदवार बनूँगा। एक भिक्षु होने के नाते मेरा अपने परिवार से कोई संपर्क नहीं है, लेकिन मैं एक भिक्षु के रूप में ही अपना जीवन व्यतीत करता रहूँगा।

बंगाल में पिछले चुनावों में पार्टी को असफलता मिली। 2016 और 2021 में बड़े सपने देखे गए। लेकिन ममता बनर्जी की ताकत के सामने टिक नहीं पाई। अब भाजपा की रणनीति बदल रही है। स्थानीय हिंदूवादी अत्याधुनिक चेहरों को भाजपा आगे लाने का काम कर रही है। उत्पल महाराज ठीक वैसा ही चेहरा हैं। वो कहते हैं कि हिंदुओं की सेवा आध्यात्मिक संगठन से नहीं हो पाती है। रथ यात्रा रामनवमी पर पुलिस की मदद लेनी पड़ रही है। टीएमसी के गुंडे पूजा तक नहीं करने देते। मुस्लिम तुष्टीरण की वजह से हिंदू हाशिये पर हैं। राजनीति में आकर ही इन समस्याओं का हल निकलेगा और यह बातें सीधे ममता बनर्जी की राजनीति पर प्रहार है। ममता की ताकत एक बड़ा आधार अल्पसंख्यक वोट है उनकी ताकत का। उनकी छवि तुष्टीरण की नहीं बल्कि सभी के लिए न्याय की रही है।

ब्रिक्स का विस्तार और भारत

—नीरज कुमार दुबे—

अब सवाल उठता है कि इस वर्ष भारत में प्रस्तावित ब्रिक्स शिखर सम्मेलन क्या मौजूदा वैश्विक तनावों के बीच संभव हो पाएगा? देखा जाये तो पश्चिम एशिया में जारी संघर्ष, रूस और पश्चिम के बीच टकराव, और अमेरिका—चीन प्रतिस्पर्धा ने वैश्विक माहौल को बेहद जटिल बना दिया है। लेकिन इतिहास बताता है कि संकट के दौर में ही ऐसे मंचों की अहमियत बढ़ जाती है। संभावना यही है कि सम्मेलन आयोजित होगा।

ब्रिक्स के विस्तार ने वैश्विक शक्ति संतुलन की बिसात पर ऐसा दांव चला है, जिसने पश्चिमी प्रभुत्व को खुली चुनौती दे दी है। भारत के लिए यह उभरती विश्व व्यवस्था में अपनी निर्णायक भूमिका दर्ज कराने का सुनहरा अवसर बन चुका है। आज जब दुनिया बहुध्रुवीय व्यवस्था की ओर तेजी से बढ़ रही है, तब ब्रिक्स का विस्तार भारत की सामरिक ताकत को कई गुना बढ़ाने वाला कारक बनकर सामने आया है।

पहले ब्रिक्स पांच देशों का समूह था, जिसकी कुल वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद में हिस्सेदारी लगभग 31 प्रतिशत के आसपास थी। लेकिन विस्तार के बाद इसमें नए सदस्य जुड़ने से यह आंकड़ा लगभग 37 से 40 प्रतिशत तक पहुँच गया है। जनसंख्या के लिहाज से भी यह समूह अब दुनिया की लगभग 45 प्रतिशत आबादी का प्रतिनिधित्व करता है। इसका सीधा अर्थ है कि भारत अब ऐसे मंच का प्रमुख स्तंभ है जो आर्थिक, जनसंख्या और संसाधनों के मामले में पश्चिमी देशों को बराबरी की टक्कर दे सकता है।

भारत के लिए सबसे बड़ा सामरिक लाभ यह है कि ब्रिक्स के जरिए वह डॉलर आधारित वैश्विक वित्तीय व्यवस्था के विकल्प को मजबूत करने में भूमिका निभा सकता है। न्यू डेवलपमेंट बैंक जैसी संस्थाएं पहले ही पश्चिमी वित्तीय संस्थानों के एकाधिकार को चुनौती दे रही हैं। यदि स्थानीय मुद्राओं में व्यापार को बढ़ावा मिलता है, तो भारत को विदेशी मुद्रा दबाव से राहत मिलेगी और उसकी आर्थिक संप्रभुता मजबूत होगी।

सामरिक स्तर पर भी यह विस्तार भारत के लिए बेहद महत्वपूर्ण है। पश्चिम एशिया और अफ्रीका के कई नए सदस्य देशों के जुड़ने से भारत की पहुंच ऊर्जा संसाधनों, समुद्री मार्गों और रणनीतिक क्षेत्रों तक बढ़ेगी। यह वही क्षेत्र हैं जहां अब तक चीन अपनी पकड़ मजबूत करता रहा है। ब्रिक्स के भीतर सक्रिय भूमिका निभाकर भारत इस प्रभाव को संतुलित कर सकता है और खुद को एक भरोसेमंद शक्ति के रूप में स्थापित कर सकता है।

अब सवाल उठता है कि इस वर्ष भारत में प्रस्तावित ब्रिक्स शिखर सम्मेलन क्या मौजूदा वैश्विक तनावों के बीच संभव हो पाएगा? देखा जाये तो पश्चिम एशिया में जारी संघर्ष, रूस और पश्चिम के बीच टकराव, और अमेरिका—चीन प्रतिस्पर्धा ने वैश्विक माहौल को बेहद जटिल बना दिया है। लेकिन इतिहास बताता है कि संकट के दौर में ही ऐसे मंचों की अहमियत बढ़ जाती है। संभावना यही है कि सम्मेलन आयोजित होगा, भले ही कुछ नेताओं की उपस्थिति प्रत्यक्ष की बजाय ऑनलाइन माध्यम से हो।

वैसे असल चुनौती यह नहीं है कि सम्मेलन होगा या नहीं, बल्कि यह है कि क्या सदस्य देश एक साझा एजेंडा पर सहमत हो पाएंगे? उल्लेखनीय है कि ब्रिक्स के भीतर भी मतभेद हैं। चीन और भारत के बीच सीमा विवाद, रूस और पश्चिम के बीच युद्ध एवं पश्चिम एशिया के देशों के संघर्ष इस मंच की एकता की परीक्षा ले रहे हैं। फिर भी, आर्थिक हित और वैश्विक संतुलन की जरूरत इन देशों को एक साथ बैठने के लिए मजबूर करती है।

इसमें कोई दो राय नहीं कि पश्चिम एशिया के मौजूदा संकट ने ब्रिक्स की प्रासंगिकता को और बढ़ा दिया है। जहां पश्चिमी देश अक्सर पक्षपातपूर्ण रुख अपनाते दिखते हैं, वहीं ब्रिक्स एक संतुलित और बहुपक्षीय समाधान की बात करता है। भारत, जो खुद को ग्लोबल साउथ की आवाज के रूप में प्रस्तुत कर रहा है, वह इस मंच के जरिए शांति पहल को निश्चित रूप से आगे बढ़ा सकता है।

वर्तमान वैश्विक संकटों के संदर्भ में भी देखें तो समाधान की दिशा में ब्रिक्स के अध्यक्ष के रूप में भारत की भूमिका निर्णायक हो सकती है। भारत पहले ही यह स्पष्ट कर चुका है कि वह संवाद, कूटनीति और अंतरराष्ट्रीय कानून के सम्मान के आधार पर समाधान चाहता है। भारत यदि मध्यस्थ की भूमिका निभाता है, तो वह न केवल अपनी वैश्विक छवि को मजबूत करेगा बल्कि ब्रिक्स को भी एक प्रभावी संकट समाधान मंच के रूप में स्थापित कर सकता है।

आंकड़ों की बात करें तो भारत की अर्थव्यवस्था तेजी से बढ़ते हुए दुनिया की शीर्ष पांच अर्थव्यवस्थाओं में शामिल है और अगले कुछ वर्षों में इसके तीसरे स्थान तक पहुंचने का अनुमान है। ऐसे में ब्रिक्स के भीतर भारत की भूमिका केवल एक सदस्य की नहीं बल्कि एक दिशा तय करने वाली शक्ति की है। डिजिटल अर्थव्यवस्था, हरित ऊर्जा और बुनियादी ढांचे के क्षेत्र में भारत की पहलें ब्रिक्स देशों के लिए मॉडल बन सकती हैं।

बहरहाल, यह स्पष्ट है कि ब्रिक्स का विस्तार भारत के लिए एक रणनीतिक वरदान है, लेकिन इसके साथ चुनौतियां भी कम नहीं हैं। यदि भारत इन चुनौतियों को संतुलित करते हुए इस मंच का प्रभावी उपयोग करता है, तो वह न केवल अपनी वैश्विक ताकत को कई गुना बढ़ा सकता है बल्कि एक नई विश्व व्यवस्था के निर्माण में केंद्रीय भूमिका निभा सकता है। यह समय भारत के लिए सिर्फ भागीदारी का नहीं, बल्कि नेतृत्व का है।

चांदी मंगाते और गिलट करते थे वापस, शातिर अंतरराज्यीय गिरोह का खुलासा, तीन आरोपी गिरफ्तार

संवाददाता–बलरामपुर। चांदी कारोबारियों को निशाना बनाकर ठगी करने वाले अंतरराज्यीय गिरोह का पुलिस ने पर्दाफाश किया है। तीन शातिर आरोपी गिरफ्तार किए गए हैं। उनके कब्जे से करीब 11 लाख की चार किलो 435 ग्राम चांदी की पायल, 3.50 लाख रुपये नकद और चार मोबाइल फोन बरामद हुए हैं। गिरोह फर्जी जीएसटी नंबर, नकली विजिटिंग कार्ड और प्रमाण पत्र के सहारे कारोबारियों का भरोसा जीतकर असली चांदी मंगवाता था। फिर उसकी जगह गिलट (नकली) चांदी भेज देता था पुलिस अधीक्षक विकास कुमार ने बताया कि 10 मार्च को आगरा निवासी चांदी कारोबारी पवन कुमार राठौर ने नगर कोतवाली में मुकदमा दर्ज कराया था। उन्होंने बताया था कि कुछ लोगों ने जीएसटी लिखा फर्जी विजिटिंग कार्ड देकर चांदी का ऑर्डर लिया। असली माल हासिल करने के बाद नकली चांदी वापस कर दी। साथ ही माल की शुद्धता का फर्जी प्रमाण पत्र भी भेज दिया। विरोध करने पर जान से मारने की धमकी दी। मामले की गंभीरता को देखते हुए सर्विलांस टीम को लगाया गया। टीम ने जांच शुरू की। जांच के दौरान आरोपियों की लोकेशन गोंडा रेलवे स्टेशन के पास मिली। पुलिस टीम ने मंगलवार को सुबह घेराबंदी करके तीनों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया। पकड़े गए आरोपियों की पहचान रवि कुमार वर्मा, आकाश अग्रहरी उर्फ शानू और लकी दुबे उर्फ प्रद्युम्न निवासी गोरखपुर के रूप में हुई है।

पूछताछ में सामने आया कि गिरोह फर्जी सिम कार्ड के जरिए कारोबारियों से संपर्क करता था। इसके बाद प्रतिष्ठित फर्मों के नाम से नकली विजिटिंग कार्ड और जीएसटी नंबर का इस्तेमाल कर विश्वास जीतते थे। आरोपी कोरियर के माध्यम से असली चांदी मंगाते और उसी चौनल से मिलावटी या गिलट चांदी वापस भेज देते थे। इस तरह बिना आमने–सामने आए ही लाखों रुपये की ठगी को अंजाम दिया जाता था। आरोपियों के पास से बरामद चार मोबाइल फोन में कई व्हाट्सएप ग्रुप मिले हैं। इन ग्रुपों के जरिए विभिन्न जिलों के कारोबारियों से संपर्क कर उनकी जानकारी जुटाते थे। साथ ही ठगी की योजना तैयार करते थे। मोबाइल में कई दस्तावेज और चौट भी मिली हैं। इनकी पुलिस गहन पड़ताल कर रही है। पुलिस का मानना है कि इससे गिरोह के अन्य सदस्यों और ठगी के कई मामलों का खुलासा हो सकता है। जांच में यह भी सामने आया कि गिरोह का संचालन गोरखपुर से किया जा रहा था, जबकि इसके तार अन्य जिलों और संभावित रूप से दूसरे राज्यों तक फैले हुए हैं। तीनों आरोपी मिलकर योजना बनाते थे। ठगी से मिली रकम का आपस में बंटवारा करते थे। पुलिस अधीक्षक ने बताया कि गिरोह के अन्य सदस्यों की तलाश की जा रही है। साथ ही यह भी जांच की जा रही है कि आरोपियों ने अब तक कितने कारोबारियों को निशाना बनाया है। जल्द ही इस अंतरराज्यीय नेटवर्क के अन्य सदस्यों को भी गिरफ्तार किया जाएगा।

129 पंचायतें टीबी मुक्त घोषित

संवाददाता–कुशीनगर। विश्व क्षयरोग दिवस पर एक कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें टीबी मुक्त भारत अभियान के तहत 129 ग्राम पंचायतों को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर 100 दिवसीय टीबी रोग खोज अभियान का भी शुभारंभ किया गया, जिसका उद्देश्य जनभागीदारी से टीबी उन्मूलन पर जोर देना है।

जिला पंचायत सभागार में आयोजित इस कार्यक्रम में वर्ष 2025 में टीबी मुक्त घोषित इन 129 ग्राम पंचायतों के प्रधानों को गांधी जी की प्रतिमा और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

अपर जिलाधिकारी वैभव मिश्र, मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. चन्द्रप्रकाश और जिला क्षयरोग अधिकारी डॉ. एस.एन. त्रिपाठी ने संयुक्त रूप से एक मोबाइल प्रचार वाहन को हरी झंडी दिखाकर 100 दिवसीय टीबी रोग खोज अभियान की शुरुआत की।

अपर जिलाधिकारी वैभव मिश्र ने अपने संबोधन में ग्राम प्रधानों से टीबी मुक्त पंचायत बनाने में सक्रिय भूमिका निभाने और ग्रामीणों की अधिक से अधिक जांच सुनिश्चित कराने का आग्रह किया। उन्होंने बीमारी से डरने के बजाय जागरूकता को आवश्यक बताया, जिससे समय पर इलाज संभव हो सके।

मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. चन्द्रप्रकाश ने कहा कि जनभागीदारी से ही टीबी जैसी बीमारी को जड़ से खत्म किया जा सकता है। उन्होंने बताया कि पडरौना ब्लॉक के बहादुरगंज और हाटा ब्लॉक के महुई गांव लगातार तीन वर्षों से टीबी मुक्त रहने पर गांधी जी की स्वर्ण प्रतिमा से सम्मानित हुए हैं।

वहीं, नेबुआ, कप्तानगंज, पडरौना और मोतीचक ब्लॉकों की पांच ग्राम पंचायतों को दूसरी बार टीबी मुक्त होने पर सिल्वर प्रतिमा प्रदान की गई। इसके अतिरिक्त, 122 ग्राम पंचायतों को पहली बार टीबी मुक्त घोषित होने पर कांस्य प्रतिमा और प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। जिला क्षयरोग अधिकारी डॉ. एस.एन. त्रिपाठी ने टीबी के लक्षण, जांच और उपचार के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने इस अभियान में टीबी कर्मियों की भूमिका को सराहनीय बताया।

इस कार्यक्रम में नगरपालिका परिषद अध्यक्ष प्रतिनिधि मनीष जायसवाल और जिला पंचायत अधिकारी आलोक प्रियदर्शी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन अनूप कुमार मिश्र ने किया, जबकि अतिथियों का स्वागत और आभार ज्ञापन संबंधित अधिकारियों द्वारा किया गया। इस अवसर पर स्वास्थ्य विभाग के कई अधिकारी, कर्मचारी और स्थानीय गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

मर्यादापूर्वक जीवन जीने का प्रधान साधन है श्रीराम कथा– स्वामी स्वरूपानन्द

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

– 9 दिवसीय संगीतमयी श्रीराम कथा

बस्ती । श्रीराम बाल्यावस्था से ही बड़े ही तेजस्वी थे। वे अपनी बाललीला से सबको आनंदित करते रहते थे। श्रीरामकथा मननोहक, भवभयतारक व मर्यादापूर्वक मानव जीवन जीने का प्रधान साधन है। यह सद् विचार कथा व्यास स्वामी स्वरूपानन्द जी महाराज ने नारायण सेवा संस्थान ट्रस्ट द्वारा आयोजित 9 दिवसीय संगीतमयी श्रीराम कथा में दुबौलिया बाजार के राम विवाह मैदान में पांचवे दिन व्यक्त किया।

महात्मा जी ने कहा कि रामजी का यज्ञोपवीत संस्कार हुआ। इसके बाद गुरु आश्रम में उन्होंने अल्प समय में ही सभी कलाओं का ज्ञान प्राप्त कर लिया। उन्होंने नामकरण के बाद प्रभु के मनोहर बाल रूप का वर्णन किया। व्यास जी ने बताया कि प्रभु श्रीरामचन्द्र ने बाल क्रीड़ा की और समस्त नगर निवासियों को सुख दिया। कौशल्याजी कभी उन्हें गोद में लेकर हिलाती–डुलाती और कभी पालने में लिटाकर झुलाती थीं ।

प्रभु की बाल लीला का वर्णन करते हुए महात्मा जी ने कहा कि एक बार माता कौशल्या ने श्री रामचन्द्रजी को स्नान कराया और श्रृंगार करके पालने पर पौढ़ा दिया। फिर अपने कुल के इष्टदेव भगवान रंगनाथ की पूजा के लिए स्नान किया, पूजा करके नैवेद्य चढ़ाया और स्वयं वहां गईं, जहां रसोई बनाई गई थी। फिर माता पूजा के स्थान पर लौट आईं और वहां आने पर पुत्र को भोजन करते देखा। माता भयभीत होकर पुत्र के पास गईं, तो वहां बालक को सोया हुआ देखा। फिर देखा कि वही पुत्र वहां भोजन कर रहा है। उनके हृदय में कंपन होने लगा। वह सोचने लगी कि यहां और वहां मैंने दो बालक देखे। यह मेरी बुद्धि का भ्रम है या और कोई विशेष कारण है? प्रभु श्री रामचन्द्रजी माता को घबराया हुआ देखकर मधुर मुस्कान से हंस दिए फिर उन्होंने माता को अपना अखंड अद्भुत रूप दिखलाया, जिसके एक–एक रोम में करोड़ों ब्रह्माण्ड लगे हुए हैं (माता का) शरीर पुलकित हो गया, मुख से वचन नहीं निकलता। तब ऑखें मूंदकर उसने रामचन्द्रजी के चरणों में सिर नवाया। माता को आश्चर्यचकित देखकर श्री रामजी फिर बाल रूप हो गए। श्रीराम की बाल लीला देखने के लिये भगवान शिव, काक भुसुण्डि के साथ ही अनेक देवी देवता, अयोध्या धाम पहुंचे और इसका सुख प्राप्त किया। विश्वामित्र का अर्थ बताते हुए स्वामी जी ने कहा कि जो विश्व का मित्र हो उसे विश्वामित्र कहते है। श्रीराम कथा के पांचवे दिन कथा व्यास का विधि विधान से मुख्य यजमान संजीव सिंह, ने कथा व्यास का पूजन किया। आयोजक बाबूराम सिंह, अनिल सिंह, जगदम्बा प्रसाद पांडे जीतबहादुर सिंह धीरा सिंह , राज नरायन पाण्डेय, सत्यनारायन द्विवेदी, गणेश तिवारी राधे गुप्ता समाजीत चौधरी, अजय सिंह अरुण सिंह रंजीत चौधरी डाक्टर आर डी मिश्रा डाक्टर जे आर गौर्या, सुनील सिंह, जसवन्त सिंह, अनूप सिंह, प्रमोद पाण्डेय, हर्षित सिंह, आदित्य सिंह,, नीरज गुप्ता, इन्द्रपती सिंह, शीला महिमा सिंह रिंकी सिंह मुस्कान आदि के साथ ही बड़ी संख्या में क्षेत्रीय नागरिक श्रीराम कथा में शामिल रहे।

बस चालक से मारपीट रोडवेज कर्मियों की हड़ताल

संवाददाता–देवरिया। जिले में एक रोडवेज बस चालक के साथ मारपीट की घटना के बाद कर्मचारियों में आक्रोश फैल गया। इसके विरोध में रोडवेज कर्मियों ने हड़ताल कर दी, जिससे बस डिपो का संचालन घंटों तक ठप रहा और यात्रियों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ा।

जानकारी के अनुसार, यह घटना बैतालपुर–देवरिया पॉलिटेक्निक मार्ग पर हुई। रोडवेज बस चालक समरजीत सिंह के साथ कथित तौर पर कुछ निजी वाहन चालकों ने मारपीट की। आरोप है कि कुछ लोगों ने चालक को घेरकर पीटा, जिसके बाद चालक ने किसी तरह अपनी जान बचाई। इस घटना से आक्रोशित रोडवेज कर्मचारियों ने तत्काल काम बंद कर विरोध प्रदर्शन शुरू कर दिया। बस डिपो पर बसों का संचालन पूरी तरह रुक गया, जिससे दूर–दराज जाने वाले यात्रियों को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ा। कई यात्री घंटों तक बसों के इंतजार में खड़े रहे, जबकि कुछ को निजी साधनों का सहारा लेना पड़ा।कर्मचारियों ने आरोपियों की जल्द गिरफ्तारी और उनके खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग की है। इस संबंध में संबंधित थाने में तहरीर भी दी गई है और उच्च अधिकारियों को घटना से अवगत कराया गया है। रोडवेज कर्मियों का कहना है कि बस चालकों और परिचालकों के साथ मारपीट की घटनाएं लगातार बढ़ रही हैं, जिससे उनमें असुरक्षा का माहौल है। उन्होंने चेतावनी दी है कि यदि आरोपियों के खिलाफ जल्द कार्रवाई नहीं की गई तो उनका आंदोलन और तेज किया जाएगा। कोतवाल राकेश राय ने कहा है कि घटना की जांच की जा रही है और जल्द ही दोषियों के खिलाफ आवश्यक कार्रवाई की जाएगी।

सामूहिक विवाह, 193 जोड़ों ने की शादी, विधायक और अधिकारियों ने नवविवाहितों को बधाई दी

संवाददाता–गोंडा। जिले के गौरा विधानसभा क्षेत्र में जिला समाज कल्याण विभाग द्वारा मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। इस दौरान 193 जोड़ों का विवाह हिंदू और मुस्लिम रीति–रिवाजों के अनुसार धूमधाम से संपन्न हुआ।

कार्यक्रम में गौरा भाजपा विधायक प्रभात वर्मा और गोंडा की जिलाधिकारी प्रियंका निरंजन मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।छपिया और बभनजोत ब्लॉक से कुल 200 जोड़ों ने इस कार्यक्रम के लिए पंजीकरण कराया था, जिनमें से 193 जोड़े विवाह बंधन में बंधे।

गोंडा की मुख्य विकास अधिकारी अंकिता जैन, छपिया ब्लॉक प्रमुख अनिल पासवान और मनकापुर एसडीएम अवनीश त्रिपाठी विशिष्ट अतिथि के तौर पर शामिल हुए। सभी अतिथियों ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया और नवविवाहित जोड़ों पर पुष्प वर्षा कर उन्हें बधाई दी।

अधिकारियों और जनप्रतिनिधियों की उपस्थिति में नवविवाहित जोड़ों ने एक–दूसरे को वरमाला पहनाई और सात जन्मों तक साथ निभाने का वादा किया। विवाह कार्यक्रम संपन्न होने के बाद, समाज कल्याण

विभाग द्वारा सभी जोड़ों को उपहार स्वरूप कपड़े, जेवरात, नकद राशि, बर्तन और अन्य आवश्यक सामान प्रदान किए गए।

भाजपा विधायक प्रभात वर्मा ने इस अवसर पर कहा कि सरकार का उद्देश्य है कि कोई भी गरीब लड़की विवाह से वंचित न रहे। उन्होंने बताया कि अब सामूहिक विवाह के तहत दी जाने वाली धनराशि को बढ़ाकर एक लाख रुपये कर दिया गया है।

विधायक वर्मा ने आगे कहा कि उनके दोनों विकास खंडों से 193 गरीब परिवारों के जोड़ों ने इस शादी में हिस्सा लिया है। उन्होंने वर्तमान सरकार की उपलब्धियों पर जोर देते हुए कहा कि उनकी सरकार ने जितना काम किया है, उतना पहले किसी सरकार ने नहीं किया, और पिछली सरकारों में भ्रष्टाचार हुआ था।

जिलाधिकारी प्रियंका निरंजन ने बताया कि गोंडा जिले में अब तक कुल 967 जोड़ों की शादी कराई जा चुकी है। उन्होंने यह भी कहा कि इसी तरह के कार्यक्रम पूरे जिले में लगातार आयोजित किए जा रहे हैं, ताकि कोई भी गरीब परिवार की लड़की शादी से वंचित न रहे।

पंखे की कुंडी में फंदे से लटककर किशोर ने दी जान

संवाददाता–देवरिया। बरहज के आजाद नगर मोहल्ले में मंगलवार की सुबह एक किशोर ने कमरे में पंखे की कुंडी से फंदे से लटक कर जान दे दी। दरवाजा तोड़कर उसका शव नीचे उतारा गया। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। आजाद नगर निवासी विशाल चौहान (17) पुत्र प्रभुनाथ चौहान दरवाजा बंद कर सो रहा था। सुबह करीब सात बजे तक जब बाहर नहीं निकला तो घर वालों को चिंता हुई। उन्होंने आवाज दी फिर भी कोई अंदर से जवाब नहीं मिला। इसी बीच आसपास के लोग भी जुट गए। उन्होंने दरवाजा तोड़ा तो विशाल का फंदे से लटका दिखा। रस्सी काटकर नीचे उतारा तो उसकी मौत हो चुकी थी। परिजनों के मुताबिक सुबह करीब चार बजे विशाल शौच के लिए बाहर निकला था। उसके बाद दरवाजा बन्द कर फिर सोने चला गया। विशाल की मौत से परिजनों का रो–रो कर बुरा हाल है।

मासूम से रेप के दोषी को 20 साल की सजा

संवाददाता–बहराइच। जिले की पॉक्सो कोर्ट ने एक मासूम से अप्राकृतिक दुष्कर्म के आरोपी को दोषी करार देते हुए 20 साल के कठोर कारावास की सजा सुनाई है। अदालत ने आरोपी पर 51 हजार रुपये का जुर्माना भी लगाया है। जुर्माना अदा न करने पर उसे अतिरिक्त कारावास भुगतना होगा।

यह मामला दो वर्ष पुराना है। रूपईडीहा थाना क्षेत्र के एक ग्रामीण ने किशन नामक व्यक्ति पर अपने नाबालिग बेटे के साथ अप्राकृतिक दुष्कर्म का आरोप लगाते हुए स्थानीय थाने में शिकायत दर्ज कराई थी। पुलिस ने पीड़ित की तहरीर पर पॉक्सो एक्ट समेत संबंधित धाराओं में मुकदमा दर्ज कर आरोपी को जेल भेज दिया था।

विशेष शासकीय अधिवक्ता संत प्रताप सिंह ने बताया कि मंगलवार को विशेष न्यायाधीश पॉक्सो अरविंद गौतम ने आरोपी किशन को दोषी मानते हुए यह फैसला सुनाया। न्यायाधीश ने उसे 20 साल के कठोर कारावास की सजा दी।

सजा के साथ ही, न्यायाधीश ने 51 हजार रुपये का अर्थदंड भी लगाया है। यदि आरोपी यह जुर्माना अदा नहीं करता है, तो उसे छह माह का अतिरिक्त कारावास भुगतना होगा।

पटाखे से लगी आग, लाखों का सामान जलाः बेटी की शादी का सामान राख

संवाददाता–महराजगंज। पनियरा थाना क्षेत्र की ग्राम सभा नरकटहा के रजही टोला में एक झोपड़ी में आग लगने से गरीब परिवार की बेटी की शादी का सारा सामान जलकर राख हो गया। यह घटना जग्गू निषाद के घर में हुई, जहां पटाखों से लगी आग ने उनकी झोपड़ी और उसमें रखे सामान को नष्ट कर दिया। परिवार के सदस्यों ने बताया कि पड़ोस के बच्चे पटाखे फोड़ रहे थे। उस समय घर पर कोई वयस्क मौजूद नहीं था, जिसके कारण बच्चों को रोका नहीं जा सका। इसी दौरान एक पटाखा झोपड़ी पर गिरा, जिससे आग लग गई और देखते ही देखते इसने विकराल रूप ले लिया। ग्रामीणों के मौके पर पहुंचकर आग बुझाने के प्रयासों से पहले ही झोपड़ी में रखा सारा सामान जलकर राख हो चुका था। इसमें आलमारी, बेड, कुर्सी, मेज, बक्सा, सिंगारदानी और अन्य आवश्यक वस्तुएं शामिल थीं। जग्गू निषाद पेशे से राजमिस्त्री हैं और उनका पुत्र परदेश में मजदूरी करता है। आर्थिक रूप से कमजोर होने के कारण, वे अपनी छोटी बेटी की शादी के लिए धीरे–धीरे सामान इकट्ठा कर रहे थे, ताकि एक साथ अधिक आर्थिक बोझ न पड़े। उनकी छोटी बेटी की शादी आगामी 8 मई को तय है। इस घटना के बाद परिवार के सामने बेटी की शादी संपन्न कराने की बड़ी चुनौती खड़ी हो गई है। स्थानीय ग्रामीणों ने प्रशासन से पीड़ित परिवार को आर्थिक सहायता प्रदान करने की मांग की है, ताकि बेटी की शादी समय पर संपन्न हो सके। इस मामले में हल्का लेखपाल ने बताया कि घटना संज्ञान में है और रिपोर्ट तैयार कर उच्च अधिकारियों को भेज दी गई है। प्रशासन की ओर से पीड़ित परिवार को जल्द सहायता मिलने की उम्मीद है।

59 ग्राम पंचायतें टीबी मुक्त घोषितः 13 पंचायतें दूसरी बार सम्मानित, प्रधानों को मिली रजत प्रतिमा

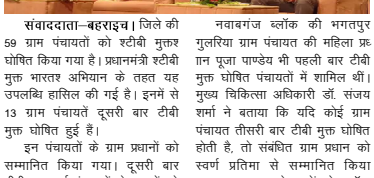

संवाददाता–बहराइच। जिले की 59 ग्राम पंचायतों को श्टीबी मुक्तश् घोषित किया गया है। प्रधानमंत्री श्टीबी मुक्त भारतश् अभियान के तहत यह उपलब्धि हासिल की गई है। इनमें से 13 ग्राम पंचायतें दूसरी बार टीबी मुक्त घोषित हुई हैं।

इन पंचायतों के ग्राम प्रधानों को सम्मानित किया गया। दूसरी बार टीबी मुक्त हुई पंचायतों के प्रधानों को गांधी की रजत प्रतिमा मिली, जबकि पहली बार टीबी मुक्त घोषित पंचायतों के प्रधानों को कांस्य प्रतिमा प्रदान की गई।

यह सम्मान समारोह मंगलवार को जिलाधिकारी कार्यालय ऑडिटोरियम में आयोजित किया गया। इसमें मुख्य अतिथि विधानपरिषद सदस्य प्रज्ञा त्रिपाठी और मुख्य विकास अधिकारी मुकेश चंद्र ने ग्राम प्रधानों और स्वास्थ्य कर्मियों को सम्मानित किया। नवाबगंज ब्लॉक की भगतपुर गुलरिया ग्राम पंचायत की महिला प्रधान पूजा पाण्डेय भी पहली बार टीबी मुक्त घोषित पंचायतों में शामिल थीं। मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. संजय शर्मा ने बताया कि यदि कोई ग्राम पंचायत तीसरी बार टीबी मुक्त घोषित होती है, तो संबंधित ग्राम प्रधान को स्वर्ण प्रतिमा से सम्मानित किया जाएगा। समारोह में रेडक्रॉस सोसायटी, व्यापार मंडल और न्यू भारत हॉस्पिटल ने 20 टीबी उपचारत बच्चों को गोद लिया और उन्हें पोषण किट प्रदान की। जिला क्षय रोग अधिकारी डॉ. एम.एल. वर्मा ने जानकारी दी कि जिले में 100 दिवसीय विशेष टीबी रोगी खोजो अभियान चल रहा है। इसके तहत अब तक 7 लाख लोगों की स्क्रीनिंग की जा चुकी है, जिसमें 10,038 टीबी मरीज चिन्हित हुए हैं। निक्षय मित्रों द्वारा 9,138 मरीजों को पोषण सहयोग भी दिया जा रहा है।

मुख्य विकास अधिकारी मुकेश चंद्र ने इस उपलब्धि का श्रेय ग्राम पंचायतों, स्वास्थ्य विभाग, आशा कार्यकर्ताओं और निक्षय मित्रों के संयुक्त प्रयासों को दिया। विधानपरिषद सदस्य प्रज्ञा त्रिपाठी ने कहा कि जनभागीदारी से ही टीबी उन्मूलन का लक्ष्य तेजी से प्राप्त किया जा सकता है। इस अवसर पर उप जिला क्षय रोग अधिकारी डॉ. संदीप मिश्रा, डीएचईआईओ बृजेश सिंह, एसटीएस, एसटीपीएलएस और सभी ग्राम पंचायतों के ग्राम प्रधान उपस्थित रहे।

सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र विशेश्वरगंज में मंगलवार को विश्व टीबी दिवस के अवसर पर एक जागरूकता गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस दौरान अधीक्षक डॉ. कुणाल मिश्रा ने क्षेत्र के पांच टीबी मरीजों को पोषण किट वितरित किए और उन्हें गोद लिया। डॉ. मिश्रा ने इस अवसर पर कहा कि टीबी एक गंभीर बीमारी है, लेकिन इसका पूर्णतः उपचार संभव है। उन्होंने बताया कि मरीजों की बेहतर देखभाल सुनिश्चित करने के लिए स्वास्थ्य विभाग के कर्मचारियों को विशेष जिम्मेदारियां सौंपी गई हैं। इसका उद्देश्य मरीजों को समय पर दवाएं उपलब्ध कराना और उनका नियमित फॉलोअप करना है।

अदालती नोटिस

(हेतु सन्दर्शित करने की सूचना साधारण प्रारूप)

न्यायालय–श्रीमान अति0 मजिस्ट्रेट महोदय प्रथम अयोध्या जिला–अयोध्या

अपील सं. 07/2025

करमचन्द आदि

बनाम

सरकार आदि

बनाम–1– सरकार उ0प्र0 द्वारा कलेक्टर जिला–अयोध्या 2. ग्राम सभा नरायनपुर द्वारा प्रधान ग्रा0 व पो0 नरायनपुर परगना हवेली अवध तहसील सदर जिला–अयोध्या 3. रामइन्दर 4. रामपाल 5. रामशंकर 6. राम प्रकाश पुत्रगण देवीदीन 7. शोधना देवी पत्नी देवीदीन निवासीगण ग्रा0 व पो0 नरायनपुर प0 हवेली अवध तहसील सदर जिला–अयोध्या

तारीख पेशी 27–03–2026

चूंकि उपरिनामांकित करम चन्द आदि ने इस न्यायालय में आवेदन किया है कि अतएवं आपके एतद द्वारा चेतावनी दी जाती है कि आप इसे आदेश के खिलाफ हेतु सन्दर्भित करने के लिये 2026 के माह 03 के 27 दिवस को 10.00 बजे पूर्वान्ह में स्वयं या सम्पर्क रूपेण अनुदिष्ट अपने अधिवक्ता द्वारा उपस्थित हो और ऐसा न करने पर उक्त आवेदन एक पक्षीय रूप से सुना जायेगा।

मेरे हस्ताक्षर और न्यायालय की मुद्रा सहित आज सन 26 के माह के दिवस को निकाली गयी।

द0 हाकिम

अदालती नोटिस

(हेतु सन्दर्शित करने की सूचना साधारण प्रारूप)

न्यायालय–श्रीमान अपर जिला अधिकारी प्रशासन महोदय अयोध्या जिला–अयोध्या

वाद सं. 2751/2023

कम्प्यूटरीकृत वाद सं0–T202304230002751

बृजेश कुवंर

बनाम

उ0प्र0 सरकार व अन्य

बनाम–1. अनिल कुमार 2. सुशील कुमार 3. प्रदीप कुमार 4. राकेश कुमार 5. मुकेश कुमार पुत्रगण स्व0 राम अभिलाख 6. सुरेश कुमार पुत्र स्व0 शिवराज 7. बृजेश कुमार पुत्र श्री सोहन लाल 8. सुशील कुमार पुत्र श्री राम कुमार समस्त निवासीगण पलिया शाहबदी परगना हवेली अवध तहसील सदर जिला–अयोध्या 9. ग्राम सभा पलिया शाहबदी परगना हवेली अवध तहसील सदर जिला–अयोध्या 10. लोले पंत्र बाबू राम निवासी ग्राम बैदारपुर परगना मंगलसी तहसील सोहावल जिला–अयोध्या

तारीख पेशी 06–04–2026

चूंकि उपरिनामांकित ने इस न्यायालय में आवेदन किया है कि अतएवं आपके एतद द्वारा चेतावनी दी जाती है कि आप इसे आदेश के खिलाफ हेतु सन्दर्भित करने के लिये 2026 के माह 04 के 06 दिवस को 10.00 बजे पूर्वान्ह में स्वयं या सम्पर्क रूपेण अनुदिष्ट अपने अधिवक्ता द्वारा उपस्थित हो और ऐसा न करने पर उक्त आवेदन एक पक्षीय रूप से सुना जायेगा।

मेरे हस्ताक्षर और न्यायालय की मुद्रा सहित आज सन 26 के माह के दिवस को निकाली गयी।

द0 हाकिम

प्रभारी मंत्री बोले– उत्तर प्रदेश बन रहा उत्तम प्रदेश

संवाददाता–श्रावस्ती। उत्तर प्रदेश सरकार के नव निर्माण के नौ वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में आयोजित 09 दिवसीय प्रदर्शनी एवं मेले के सातवें दिन प्रभारी मंत्री नितिन अग्रवाल ने मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की। राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) आबकारी ने कलेक्ट्रेट स्थित तथागत हॉल में फीता काटकर और दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

उन्होंने विभिन्न विभागों द्वारा लगाए गए स्टॉलों और प्रदर्शनी का अवलोकन भी किया। प्रभारी मंत्री ने विभिन्न सरकारी योजनाओं के लाभार्थियों को लैपटॉप, प्रमाण पत्र और टूलकिट वितरित किए। इनमें मुख्यमंत्री बाल सेवा योजना के तहत प्रमाण पत्र, टीबी मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत टीबी मुक्त ग्राम पंचायतों को गांधी की स्वर्ण, रजत व कांस्य प्रतिमाएं शामिल थीं।

निपुण सम्मान, राष्ट्रीय आय एवं योग्यता आधारित छात्रवृत्ति परीक्षा में

चयनित विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र दिए गए। विश्वकर्मा श्रम सम्मान योजना के तहत बढ़ई, राजमिस्त्री और दर्जी को टूलकिट भी प्रदान की गईं।युवा कल्याण विभाग ने विवेकानंद यूथ अवार्ड के तहत महिला मंगल दल और युवक मंगल दल को 20–20 हजार रुपये की पुरस्कार राशि प्रदान की।

संभावित बाढ़ की स्थिति को देखते हुए, जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण ने 75 नाविकों को उनकी नाव की क्षमता के अनुसार लाइफ जैकेट वितरित कीं। कार्यक्रम के दौरान सूचना एवं जनसंपर्क विभाग से पंजीकृत सांस्कृतिक दलों और कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय की छात्राओं ने स्वागत गीत और सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दीं, जिनकी दर्शकों ने सराहना की।

अपने संबोधन में प्रभारी मंत्री नितिन अग्रवाल ने कहा कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश ष्उत्तम प्रदेशश बन रहा है। उन्होंने बताया कि राज्य में कानून व्यवस्था सुदृढ़ हुई है, निवेश बढ़ा है और प्रदेश की अर्थव्यवस्था को मजबूती मिली है। मंत्री ने यह भी उल्लेख किया कि प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि हुई है और प्रदेश वन–ट्रिलियन डॉलर अर्थव्यवस्था के लक्ष्य की ओर तेजी से बढ़ रहा है। इस कार्यक्रम में जिला पंचायत श्रावस्ती के अध्यक्ष, स्थानीय विधायक, विधान परिषद सदस्य, जिलाध्यक्ष, जिलाधिकारी श्रावस्ती और पुलिस अधीक्षक श्रावस्ती सहित कई जनप्रतिनिधि, अधिकारी और बड़ी संख्या में आमजन उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन आपदा विशेषज्ञ अरुण कुमार मिश्र ने किया।

एक अप्रैल से चलेगा संचारी रोग नियंत्रण अभियान

संवाददाता—गोरखपुर। आगामी एक अप्रैल से शुरू होने वाले संचारी रोग एवं दस्तक अभियान को प्रभावी बनाने के लिए मंगलवार को नगर निगम सभागार में सफाई कर्मचारियों और सुपरवाइजरों के लिए प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित हुई। कार्यशाला में अभियान के तहत संचारी रोगों की रोकथाम और नियंत्रण के लिए विस्तृत दिशा—निर्देश दिए गए। यह प्रशिक्षण नगर स्वास्थ्य अधिकारी डॉ वी के पांडेय और डॉ. राजेश कुमार की अध्यक्षता में आयोजित हुआ, जिसमें 1 अप्रैल से 30 अप्रैल तक चलने वाले अभियान की रणनीति समझाई गई। प्रशिक्षण में बताया गया कि वेक्टर जनित रोगों (डेंगू, मलेरिया आदि) से बचाव के लिए नियमित सफाई, जलभराव खत्म करना, लार्वीसाइड छिड़काव और फॉगिंग, हैंडवॉश और शौचालय के उपयोग को बढ़ावा देने के साथ पार्क और नालियों की सफाई जैसे कार्य प्राथमिकता पर किए जाएंगे।

साथ ही, आम लोगों को बैठकों और जागरूकता कार्यक्रमों के जरिए जागरूक किया जाएगा।डेंगू—मलेरिया रोकथाम के लिए विशेष व्यवस्थाडॉ. राजेश कुमार ने बताया कि महानगर 23 शहरी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों को 6 भागों में बांटा गया है। प्रत्येक क्षेत्र में मलेरियाध्फाइलेरिया निरीक्षकों की तैनाती की गई है। कूलर, गमले, टूटे बर्तन, निर्माणाधीन भवनों में जमा पानी की निगरानी की जाएगी। जरूरत पड़ने पर एंटी—लार्वा छिड़काव कराया जाएगास्वास्थ्य केंद्रों पर जांच की व्यवस्थाडॉ. वी के पांडेय ने बताया कि सभी 23 शहरी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों पर डेंगू, मलेरिया समेत अन्य जांच की सुविधा उपलब्ध है। बुखार के मरीजों की त्वरित जांच और उपचार सुनिश्चित किया जाएगा। कार्यशाला में यूनिसेफ के प्रतिनिधि ने माइक्रोप्लान के अनुसार रोजाना गतिविधियां संचालित कर उनकी रिपोर्टिंग करने पर जोर दिया। इसके अलावा नगर निगम के अधिकारियों और स्वास्थ्य विभाग की टीम ने भी अभियान से जुड़ी जिम्मेदारियों की जानकारी दी।

मंत्री अनिल राजभर ने बताया प्रवासी भारतीयों के लिए योगी सरकार का प्लान, गिनाई 9 साल की उपलब्धियां

संवाददाता—सिद्धार्थनगर। जिले के प्रभारी व श्रम एवं सेवायोजन विभाग के मंत्री अनिल राजभर ने मंगलवार को खाड़ी देश में ईरान व इजराइल और अमेरिका में युद्ध चल रहा है। खाड़ी देशों में करीब एक करोड प्रवासी भारतीय रह रहे हैं। युद्ध की स्थिति को देखते हुए भारत ने उन्हें वापस आने के लिए कहा है। अगर कोई वापस अपने देश में आना चाहता है तो उसे सुरक्षित बुलाया जाएगा। कोविड काल की भांति इन्हें रोजगार भी उपलब्ध कराया जाएगा। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अध्यक्षता में मंत्रिपरिषद की बैठक हुई। उसमें कई महत्वपूर्ण बिंदुओं पर निर्णय लिया गया। गेहूं के न्यूनतम समर्थन खरीद मूल्य में 160 रुपये प्रति क्विंटल की बढ़ोत्तरी करने का निर्णय लिया गया है। किसान जब तक अपना गेहूं बेचना चाहेंगे, वह केंद्रों पर बेच सकेंगे। शिक्षामित्रों के बाद अब जल्द ही आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को भी खुशखबरी मिलेगी।

जिले के प्रभारी मंत्री अनिल राजभर ने यह बातें लोहिया कला भीवन में प्रदेश सरकार के नौ वर्ष पूर्ण होने पर आयोजित कार्यक्रम में कहीं। उन्होंने प्रदेश सरकार के विकास कार्यों की जानकारी दी। सेवानिवृत्त सैन्य कर्मियों के साथ उत्कृष्ट कार्य करने वाले ग्राम प्रधान, आशा और आंगनबाड़ी कार्यकर्ता, योजनाओं के लाभार्थियों को प्रशस्तिपत्र देकर सम्मानित किया। पत्रकार वार्ता में शासन की योजनाओं को बताया। खाड़ी में चल रहे युद्ध का वैश्विक प्रभाव पड़ा है। लेकिन भारत के पोत को सभी रास्ता दे रहे हैं। यह कुटनीतिक जीत है। जिला के प्रभारी मंत्री अनिल राजभर ने कहा कि देश में वर्ष 2014 और प्रदेश में 2017 से पहले के हालात को देख वर्तमान से समीक्षा करें। प्रदेश में शिक्षामित्रों का मानदेय बढ़ाने का काम किया गया। आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं के भी मानदेय को बढ़ाया जाएगा। किसानों के हित को ध्यान में रखते हुए गेहूं का समर्थन मूल्य बढ़ाने का निर्णय लिया गया है। प्रदेश में विकास कार्य तेजी से हो रहा है। औद्योगिक क्रांति लाने की राह पर प्रदेश अग्रसर है। कानून व्यवस्था को लागू किया गया है। अपराधियों के खिलाफ कार्रवाई की जा रही है।

विधायक कपिलवस्तु श्यामधनी राही, भाजपा जिलाध्यक्ष दीपक मौर्या, नगर पालिका अध्यक्ष गोविंद माधव, सांसद प्रतिनिधि एसपी अग्रवाल, जिलाधिकारी शिवशरणप्पा जीएन, पुलिस अधीक्षक डा. अभिषेक महाजन, सीडीओ बलराम सिंह, सीएमओ डा. रजत कुमार चौरसिया, बीएसए शैलेश कुमार समेत अन्य मौजूद रहे।

जिला के प्रभारी मंत्री अनिल राजभर ने कहा कि खाड़ी युद्ध का भारत पर कोई विशेष प्रभाव नहीं है। केंद्र सरकार ने युद्ध प्रारंभ होने पर गैस सिलिंडर की 45 दिन पर डिलेवरी करने का निर्देश जारी किया। लेकिन अब इसे घटा कर 25 दिन कर दिया है। केंद्र सरकार का मानना है कि एक परिवार में औसत 20 से 25 दिन एक गैस सिलिंडर का खर्च है। वहीं प्रतिपक्ष के राहुल गांधी और अखिलेश यादव भ्रम की स्थिति पैदा कर रहे हैं। उनकी बातों पर ध्यान देने की आवश्यकता नहीं है।

जिला के प्रारी मंत्री अनिल राजभर ने कहा कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अध्यक्षता में मंत्रिपरिषद की बैठक हुई। इसमें नॉर्थ—साउथ कॉरिडोर को मंजूरी दी गई। यह कारीडोर सिद्धार्थनगर से प्रराभ होगा। यहां के लिए यह एक सौगात है। इससे आवागमन सुगम होगा और जनपद का चहुंमुखी विकास होगा।

ब्लॉक स्तरीय संगोष्ठी संपन्न

संवाददाता—सिद्धार्थनगर। विकास खंड उसका बाजार के सभागार में मंगलवार को एक ब्लॉक स्तरीय संगोष्ठी एवं उन्मुखीकरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में ग्राम प्रधान, स्थानीय निकाय के सदस्य और परिषदीय विद्यालयों के प्रधानाध्यापक बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। सदर विधायक श्यामधनी राही ने मां सरस्वती के चित्र पर दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। मुख्य अतिथि सदर विधायक श्यामधनी राही ने अपने संबोधन में कहा कि सरकार की प्राथमिकता परिषदीय विद्यालयों में बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और आवश्यक सुविधाएं प्रदान करना है। उन्होंने बताया कि डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर के जरिए अभिभावकों के खातों में धनराशि भेजी जा रही है, ताकि बच्चों को समय पर यूनिफॉर्म, स्कूल बैग और स्टेशनरी मिल सके।

135 जोड़ों का सामूहिक विवाह संपन्न

संवाददाता—संतकबीरनगर। जिले के सियरासांथा में मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना के तहत 135 जोड़ों का विवाह संपन्न हुआ। इनमें से 132 जोड़ों ने हिंदू रीति—रिवाज से विवाह किया, जबकि तीन जोड़ों का निकाह मुस्लिम परंपरा के अनुसार कराया गया। इस अवसर पर सदर विधायक अंकुर राज तिवारी, धनघटा विधायक गणेश चौहान और भाजपा जिलाध्यक्ष नीतू सिंह मौजूद रहे। उन्होंने नवविवाहित जोड़ों पर पुष्प वर्षा कर उन्हें आशीर्वाद दिया और उनके सुखमय जीवन की कामना की।

अदालती नोटिस

सम्मन बरगज इनफिसाल मुकदमा
(आर्डर 5 कायदा 1 व 5 मजमुआ जाप्ता 200 ई0)
नम्बर मुकदमा—
कं0 वाद सं0—T202517140312829
धारा 116 उ0प्र0 राजस्व संहिता 2006
अदालत— श्रीमान अति0 अधिकारी प्रथम महोदय बस्ती जिला—बस्ती
श्रीमती सीमा देवी आदि
बनाम
प्रियांशू आदि

1. प्रियांशू नावालिग उम्र 7 वर्ष पुत्र बालकेश संरक्षिका माता श्रीमती मन्जू पत्नी बालकेश 2. प्रियांशी नावालिग उम्र 5 वर्ष पुत्री बालकेश संरक्षिका माता श्रीमती मन्जू पत्नी बालकेश साकिनान मौजा मूड़ाडीहा तप्पा हवेली परगना बस्ती पूरव तहसील व जिला बस्ती 3. श्रीमती राधा देवी पत्नी राम प्रताप साकिन मौजा जामडीह तप्पा हवेली परगना बस्ती पूरव तहसील व जिला बस्ती

—प्रतिवादीगण प्रथम वर्ग

4. उमेश कुमार 5. सुरेन्द्र कुमार 6. संगम कुमार पुत्रगण हरिराम साकिनान मौजा मूड़ाडीहा तप्पा हवेली परगना बस्ती पूरव तहसील व जिला बस्ती

—प्रतिवादीगण द्वितीय वर्ग

7. गांव पंचायत साकिन मौजा मूड़ाडीह तप्पा हवेली परगना बस्ती पूरव तहसील व जिला बस्ती

—प्रतिवादी तृतीय वर्ग

तारीख पेशी 30—03—2026

वाजेह हो कि ने आपके नाम एक नालिस बाबत दायर की है। लिहाजा आपको हुक्म होता है कि आप बतारीख 30 माह 03 सन 2026 ई0 बवक्त 10 बजे दिन बमुकाम असालतन या मारफत वकील के जो मुकदमे के हालत से करार वाकई वाकिफ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतल्लिका मुकदमा जबाब दे सके या जिसके साथ कोई और सख्श हो जो कि जबाब ऐसे सवालत का दे सके हाजिर हों और जबाबदेही दावा कीजिये और हरगाह वही तारीख जो आपके हाजिरी के लिये मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल कत्तई मुकदमा के तजबीज हुई है और आपको लाजिम है कि उसी रोज जुमला दस्तावेज को जिनको आप अपनी जबाबदेही के तहत इस्तदलाल करना चाहते हों पेश करें।

आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आपके मसमुआ और फैसला होगा।

बसख्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के आज बतारीख 24 माह 03 सन 2026 ई0 जारी किया गया।

द0 हाकिम

अदालती नोटिस

इत्तिलानामा दरख्वास्त हुसूल हुक्म मुशहर मन्सूखी डिसमिसी नालिश
(आर्डर 9 कायदा 9) (2)
अदालत—श्रीमान सिविल जज (जू0डि0) बस्ती जिला—बस्ती
कायमी प्रा0 पत्र सं0—436 / 2025
मूलवाद सं0— 139 / 1998
मिटठू लाल आदि
बनाम
शेषराम आदि

1. शेषराम उम्र लगभग 60 वर्ष पुत्र शंकरदीन 2/1 श्रीमती कैलाशी उम्र लगभग 78 वर्ष पत्नी स्व0 राम उजागिर 2/2 वीरेन्द्र चौधरी उम्र लगभग 45 वर्ष पुत्र रामउजागिर निवासीगण ग्राम अजगैवा जंगल टोला (पंड़ितपुर) तप्पा शिवपुर परगना बस्ती पूरव तहसील भानपुर जिला बस्ती

तारीख पेशी 16—04—2026

हरगाह मुद्दई मजकुरूसदर ने इस अदालत में दरख्वास्त हुकूम मुशहर मन्सूखी डिसमिसी नालिश नाबुदा हस्ब हिदायत अदालत हाजा बतारीख माह सन ई0 पेश को है।

लिहाजा आपको इत्तिला दी जाती है कि आप इस अदालत में बतारीख 16 माह 04 सन 2026 या असालतन या बजरिये वकील अदालत हाजा या मुख्तार मजाज हस्ब जाप्ता और वाकिफ हाल मुकदमा में हाजिर होकर वजह (अगर कोई हो) जाहिर करें कि नाबुर्दा की दरख्वास्त क्यों न मन्जूर किया जाय।

मेरे दस्तखत और मुहर अदालत से आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया।

द0 हाकिम

अदालती नोटिस

सम्मन बनाम कायम मुकाम कानूनी मुद्दाअलेह मुतवफ्फा
(आर्डर 22, कायदा 4)
न्यायालय—श्रीमान सिविल जज (जू0डि0) एफ0टी0सी0 महोदय बस्ती जिला—बस्ती
मूलवाद सं0—811 / 2002
राम प्रताप
बनाम
गुजराती

8. शिव कुमार पुत्र स्व0 राम प्रताप साकिन संतोषपुर तप्पा बखिरा परगना मगहर पूरव तहसील खलीलाबाद वर्तमान मेंहदावल जिला संतकबीरनगर हाल पता ग्राम पिपरी तप्पा उजियार परगना मगहर पूरव तहसील मेंहदावल जिला संतकबीरनगर

तारीख पेशी 16—04—2026

हरगाह मुद्दई ने एक नालिश इस अदालत में बतारीख माह सन 20 ई0 बनाम मुद्दाअलेह के रूजू की थी, जो बाद की मौत हरगाह मुद्दई मजकूर ने एक दरख्वास्त इस अदालत में गुजारी है कि आप मुतवफ्फा मजकूर का कायम मुकाम कानूनी वारिस है और चाहता है कि बजाय उसके मुद्दाअलेह बनाये जांय। लिहाजा आपको हुक्म होता है कि बतारीख 16 माह 04 सन 2026 ई0 बवक्त 10 बजे इस अदालत में हाजिर होकर मुकदमा मजकूर जबाबदेही कीजिये और अगर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा वगैर हाजिरी आपके मसमूअ और फैसला होगा।

बवक्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया।

द0 हाकिम

आवश्यकता है

मां गायत्री गंगा प्रसाद मिश्र महिला पी.जी. कॉलेज कप्तानगंज – बस्ती में निम्न विषयों में प्राध्यापकों की।

स्नातक स्तर— हिन्दी, समाज शास्त्र, भूगोल में एक—एक पद एवं परास्नातक स्तर – गृह विज्ञान, समाज शास्त्र एवं वनस्पति विज्ञान में एक—एक पद।

योग्यता—यूजीसी एवं सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु सिद्धार्थनगर के मानक के अनुसार।

इच्छुक अभ्यर्थी विज्ञापन प्रकाशन के 7 दिनों के भीतर अपना आवेदन महाविद्यालय में प्रस्तुत करें।

प्रबंधक
(श्रीमती सुशीला देवी)
मो0 नं0 9415174312, 9452213883

कार्यालय नगर पालिका परिषद बस्ती

पत्रांक— 4100 A न०पा०प०ब० / 2025—26 दिनांक 23—3—2026

विज्ञप्ति

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि आवासन एवं शहरी कार्य मंत्रालय भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा जनपद स्तर पर RSA (रिस्पांसिबल सैनिटेशन अथॉरिटी) एवं निकाय क्षेत्र में ESRU (इमरजेंसी सैनिटेशन रिस्पांस यूनिट, कॉन्टैक्ट नंबर रु 1533 का गठन किया गया है इसका उद्देश्य सीवर और सेप्टिक टैंक्स मेंटेनेंस और प्रबंधन हेतु पेशेवर प्रशिक्षित एवं उचित सुरक्षा उपकरणों से सुसज्जित कार्यबल का उपयोग किया जाना है जिससे सीवर कामगारों की मृत्यु दुर्घटनाओं का उन्मूलन किया जा सके।

अधिशासी अधिकारी, नगर पालिका परिषद बस्ती

अध्यक्ष नगर पालिका परिषद बस्ती

सूचना

मेरा हाईस्कूल का अंक पत्र के. एच. एस. स्कूल डारीडीहा गांधी नगर बस्ती, वर्ष 1991, अनुक्रमांक 082205 जो वास्तव में कहीं गिर गया है।

कु0 ममता देवी
पत्नी जगत नरायन त्रिपाठी
ग्राम व पोस्ट बहादुरपुर
जिला बस्ती

अदालती नोटिस

(हेतु सन्दर्शित करने की सूचना साधारण प्रारूप)
(आर्डर 5 कायदा 3)
न्यायालय—श्रीमान नायब तहसीलदार सदर बस्ती जिला—बस्ती
वाद सं0 1411 / 2023
कं0वाद सं0—202317140310732 / 2023
धारा 35 (1) उ0प्र0रा0सं0 2006
श्रीमती ममता पाण्डेय
बनाम
जगदीश प्रसाद

मौजा जयपुरवा तप्पा हवेली परगना बस्ती पूरव तहसील व जिला बस्ती

1. श्रीमती ममता पाण्डेय पत्नी कृष्णगोपाल पाण्डेय निवासी मौजा बैरहना तप्पा हरदी परगना बस्ती पश्चिम पोस्ट बरहपुर तहसील हर्रैया जिला बस्ती

तारीख पेशी 28—03—2026

चूंकि उपरीनामांकित ने इस न्यायालय में आवेदन किया है कि अतएवं आपके एतद द्वारा चेतावनी दी जाती है कि आप इसे आदेश के खिलाफ हेतु सन्दर्भित करने के लिये 2026 के माह 03 के 28 दिवस को 10.00 बजे पूर्वान्ह में स्वयं या सम्पर्क रूपेण अनुर्दिष्ट अपने अधिवक्ता द्वारा उपस्थित हो और ऐसा न करने पर उक्त आवेदन एक पक्षीय रूप से सुना जायेगा।

मेरे हस्ताक्षर और न्यायालय की मुद्रा सहित आज सन 20 के माह के दिवस को निकाली गयी।

द0 हाकिम

अदालती नोटिस

सम्मन वास्ते करारवाद उमूर तनकीह तलब
(आर्डर 5 कायदा 1 व 5)
न्यायालय— श्रीमान प्रथम अपर सिविल जज (जू0डि0) महोदय बस्ती जिला—बस्ती
वाद सं0—764 / 2011
रामसुधारे आदि
बनाम
श्रवण कुमार आदि

3/1 शिवगोपाल पुत्र कृष्ण कुमार उम्र लगभग 28 साल साकिन कुरदा तप्पा गौर परगना बस्ती पश्चिम तहसील हर्रैया जिला बस्ती 3/2 चन्द्रावती उम्र 38 साल पुत्री शंकरनाथ पत्नी रामगोपाल ग्राम बसखोरिया तहसील बांसी जिला—सिद्धार्थनगर 3/3 सीमा उम्र 35 साल पुत्री शंकरनाथ पत्नी बब्लू ग्राम मूड़ाडीहा पो0 रिठिया सिद्धार्थनगर 3/4 सरोज उम्र 30 साल पुत्री शंकरनाथ पत्नी पिन्टू ग्राम मूड़ाडीहा पो0 रिठिया सिद्धार्थनगर 3/5 श्रीमती सुशीला देवी उम्र 44 साल बहू शंकरनाथ व पत्नी कृष्ण कुमार 3/6 बबिता पाण्डेय उम्र 20 साल पौत्री शंकरनाथ व पुत्री कृष्णकुमार साकिन कुरदा तप्पा गौर परगना बस्ती पश्चिम तहसील हर्रैया जिला बस्ती

तारीख पेशी 31—03—2026

हरगाह ने आपके नाम नालिश बाबत के दायर की है। लिहाजा आपक 31 माह 03 सन 2026 ई0 बवक्त 10 बजे दिन असालतन या मारफत वकील के जो मुकदमें के हालत से करार वाकई वाकिफ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतल्लिका मुकदमा जबाब दे सके या जिसके साथ कोई और सख्श हो जो कि जबाब ऐसे सवालत का दे सके हाजिर हों और जबाबदेही दावा कीजिये और हरगाह वही तारीख जो आपके इजहार के लिये मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल कत्तई मुकदमा के तजबीज हुई है और आपको लाजिम है कि उसी रोज जुमला दस्तावेज को जिनको आप अपनी जबाबदेही के तहत इस्तेमाल करना चाहते हों पेश करें।

आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आपके मसमुआ और फैसला होगा।

बसख्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया।

—द0 हाकिम

अदालती नोटिस

सम्मन वास्ते करारवाद उमूर तनकीह तलब
(आर्डर 5 कायदा 1 व 5)
न्यायालय— श्रीमान सिविल जज (सी0डि0) महोदय बस्ती जिला—बस्ती
मूलवाद सं0—522 / 2025
बच्चूलाल
बनाम
शिवनाथ आदि

1—शिवनाथ उम्र लगभग 40 साल पुत्र राम पियारे साकिन—रैकवार, तप्पा—गनेशपुर, परगना नगर पूरब, तहसील व जिला—बस्ती।

प्रतिवादी प्रथमवर्ग

2—लालता उम्र लगभग 80 साल पुत्र सम्हर उर्फ सम्भर 3—रूद्र नरायन उम्र लगभग 60 साल पुत्र राम अजोर 4—राम लोचन उम्र लगभग 85 साल पुत्र बलिकरन 5—राम तीरथ उम्र लगभग 80 साल पुत्र बलिकरन 6—राम जतन उम्र लगभग 70 साल पुत्र बलिकरन 7—महेन्द्र प्रसाद उम्र लगभग 35 साल पुत्र महादेव 8—तिलकराम उम्र लगभग 70 साल पुत्र राम लखन 9—राम सागर उम्र लगभग 75 साल पुत्र राम दुलारे 10—प्रानपती उम्र लगभग 75 साल पत्नी राम रतन 11—दीप नरायन उम्र लगभग 35 साल पुत्र राम रतन 12—धर्मेन्द्र कुमार उम्र लगभग 25 साल पुत्र राम रतन 13—श्याम नरायन उम्र लगभग 40 साल पुत्र राम उजागिर 14—राज नरायन उम्र लगभग 37 साल पुत्र राम उजागिर 15—जय प्रकाश नरायन उम्र लगभग 35 साल पुत्र राम सुरेमन साकिनान मौजा—भूपालपुर, तप्पा—गनेशपुर, परगना—नगर पूरब, तहसील व जिला—बस्ती।

तारीख पेशी 22—04—2026

हरगाह ने आपके नाम नालिश बाबत के दायर की है। लिहाजा आपक 22 माह 04 सन 2026 ई0 बवक्त 10 बजे दिन असालतन या मारफत वकील के जो मुकदमें के हालत से करार वाकई वाकिफ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतल्लिका मुकदमा जबाब दे सके या जिसके साथ कोई और सख्श हो जो कि जबाब ऐसे सवालत का दे सके हाजिर हों और जबाबदेही दावा कीजिये और हरगाह वही तारीख जो आपके इजहार के लिये मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल कत्तई मुकदमा के तजबीज हुई है और आपको लाजिम है कि उसी रोज जुमला दस्तावेज को जिनको आप अपनी जबाबदेही के तहत इस्तेमाल करना चाहते हों पेश करें।

आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आपके मसमुआ और फैसला होगा।

बसख्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया।

—द0 हाकिम

अदालती नोटिस

सम्मन वास्ते करारवाद उमूर तनकीह तलब
(आर्डर 5 कायदा 1 व 5)
न्यायालय— श्रीमान सिविल जज (जू0डि0) खलीलाबाद महोदय बस्ती जिला—बस्ती
वाद सं0—200 / 2025
शिव प्रसाद
बनाम
रामऔतार आदि

1. रामऔतार उम्र 66 वर्ष पुत्र चन्द्रबली —प्रतिवादी प्रथम वर्ग
2. रामसजीवन उम्र 50 साल पुत्र रामउग्रह 3. रामजनक उम्र 60 साल पुत्र रामउग्रह निवासीगण ग्राम उमरिया उर्फ अमिलहा तप्पा मथौली परगना महुली पश्चिम तहसील व जिला बस्ती

—प्रतिवादीगण द्वितीय वर्ग

तारीख पेशी 04—05—2026

हरगाह ने आपके नाम नालिश बाबत के दायर की है। लिहाजा आपक 04 माह 05 सन 2026 ई0 बवक्त 10 बजे दिन असालतन या मारफत वकील के जो मुकदमें के हालत से करार वाकई वाकिफ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतल्लिका मुकदमा जबाब दे सके या जिसके साथ कोई और सख्श हो जो कि जबाब ऐसे सवालत का दे सके हाजिर हों और जबाबदेही दावा कीजिये और हरगाह वही तारीख जो आपके इजहार के लिये मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल कत्तई मुकदमा के तजबीज हुई है और आपको लाजिम है कि उसी रोज जुमला दस्तावेज को जिनको आप अपनी जबाबदेही के तहत इस्तेमाल करना चाहते हों पेश करें।

आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आपके मसमुआ और फैसला होगा।

बसख्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया।

—द0 हाकिम

अदालती नोटिस

सम्मन वास्ते करारवाद उमूर तनकीह तलब
(आर्डर 5 कायदा 1 व 5)
न्यायालय— श्रीमान सिविल जज (सी0डि0) एफ0टी0सी0 महोदय बस्ती जिला—बस्ती
मूलवाद सं0—277 / 2012
शिवपूजन (मृतक) आदि
बनाम
बलिहारी आदि

2. हरिनाथ उम्र लगभग 52 साल पुत्र जीवधन 3. अशोक कुमार उम्र लगभग 48 साल पुत्र भगवानदास 4. श्रीमती भूईला उम्र लगभग 65 साल पत्नी स्व0 दीपक 5. शिव कुमार उम्र लगभग 33 साल 6. अशोक कुमार उम्र लगभग 30 साल पुत्रगण स्व0 बीपत निवासीगण मौजा कुडही तप्पा रूधौली परगना मगहर पश्चिम तहसील रूधौली जिला बस्ती

तारीख पेशी 30—04—2026

हरगाह ने आपके नाम नालिश बाबत के दायर की है। लिहाजा आपक 30 माह 04 सन 2026 ई0 बवक्त 10 बजे दिन असालतन या मारफत वकील के जो मुकदमें के हालत से करार वाकई वाकिफ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतल्लिका मुकदमा जबाब दे सके या जिसके साथ कोई और सख्श हो जो कि जबाब ऐसे सवालत का दे सके हाजिर हों और जबाबदेही दावा कीजिये और हरगाह वही तारीख जो आपके इजहार के लिये मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल कत्तई मुकदमा के तजबीज हुई है और आपको लाजिम है कि उसी रोज जुमला दस्तावेज को जिनको आप अपनी जबाबदेही के तहत इस्तेमाल करना चाहते हों पेश करें।

आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आपके मसमुआ और फैसला होगा।

बसख्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया।

—द0 हाकिम

अदालती नोटिस

सम्मन वास्ते करारवाद उमूर तनकीह तलब
(आर्डर 5 कायदा 1 व 5)
न्यायालय— श्रीमान सिविल जज (जू0डि0) महोदय बस्ती जिला—बस्ती
मूलवाद सं0—745 / 2022
राजेन्द्र प्रसाद चौधरी आदि
बनाम
नीलम आदि

1. नीलम उम्र लगभग 45 साल पत्नी विजय कुमार चौधरी ग्राम ओड़वारा मोहल्ला मुड़िला तप्पा हवेली परगना बस्ती पूरव तहसील व जिला बस्ती पोस्ट ओड़वारा 2. शिव कुमार चौधरी पुत्र स्व0 नरपत ग्राम ओड़वारा मोहल्ला मुड़िला तप्पा हवेली परगना बस्ती पूरव तहसील व जिला बस्ती पोस्ट ओड़वारा

तारीख पेशी 25—04—2026

हरगाह ने आपके नाम नालिश बाबत के दायर की है। लिहाजा आपक 25 माह 04 सन 2026 ई0 बवक्त 10 बजे दिन असालतन या मारफत वकील के जो मुकदमें के हालत से करार वाकई वाकिफ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतल्लिका मुकदमा जबाब दे सके या जिसके साथ कोई और सख्श हो जो कि जबाब ऐसे सवालत का दे सके हाजिर हों और जबाबदेही दावा कीजिये और हरगाह वही तारीख जो आपके इजहार के लिये मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल कत्तई मुकदमा के तजबीज हुई है और आपको लाजिम है कि उसी रोज जुमला दस्तावेज को जिनको आप अपनी जबाबदेही के तहत इस्तेमाल करना चाहते हों पेश करें।

आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आपके मसमुआ और फैसला होगा।

बसख्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया।

—द0 हाकिम

अदालती नोटिस

सम्मन वास्ते करारवाद उमूर तनकीह तलब
(आर्डर 5 कायदा 1 व 5)
न्यायालय— श्रीमान सिविल जज (जू0डि0) महोदय बस्ती जिला—बस्ती
वाद सं0—608 / 2025
रामबहोर आदि
बनाम
दुर्गा प्रसाद ओझा आदि

1. दुर्गा प्रसाद ओझा आयु 50 वर्ष पुत्र चन्द्रबली ओझा 2. अभिजीत ओझा आयु 28 वर्ष पुत्र दुर्गा प्रसाद ओझा 3. अनुराम ओझा आयु 19 वर्ष पुत्र दुर्गा प्रसाद ओझा 4. अभिषेक ओझा आयु 21 वर्ष पुत्र दुर्गा प्रसाद ओझा साकनिान मौजा बेलवाजोर तप्पा नवाई परगना नगर पश्चिम तहसील हर्रैया जिला बस्ती

तारीख पेशी 28—03—2026

हरगाह ने आपके नाम नालिश बाबत के दायर की है। लिहाजा आपक 28 माह 03 सन 2026 ई0 बवक्त 10 बजे दिन असालतन या मारफत वकील के जो मुकदमें के हालत से करार वाकई वाकिफ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतल्लिका मुकदमा जबाब दे सके या जिसके साथ कोई और सख्श हो जो कि जबाब ऐसे सवालत का दे सके हाजिर हों और जबाबदेही दावा कीजिये और हरगाह वही तारीख जो आपके इजहार के लिये मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल कत्तई मुकदमा के तजबीज हुई है और आपको लाजिम है कि उसी रोज जुमला दस्तावेज को जिनको आप अपनी जबाबदेही के तहत इस्तेमाल करना चाहते हों पेश करें।

आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आपके मसमुआ और फैसला होगा।

बसख्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया।

—द0 हाकिम

दैनिक भारतीय बस्ती

संस्थापक सम्पादक स्व. दिनेश चन्द्र पाण्डेय

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक प्रदीप चन्द्र पाण्डेय द्वारा दर्पण प्रिन्टिंग प्रेस वि0. नया हाल 1—4 A लोहिया काम्पलेक्स जिला पंचायत भवन गांधीनगर बस्ती (उ.प्र.) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

प्रबन्ध सम्पादक—**दिनेश सिंह**
संयुक्त सम्पादक—**प्रदीप चन्द्र पाण्डेय**
अयोध्या—फैजाबाद कार्यालय—
चतुर्भुजी मंदिर परिसर लक्ष्मण घाट अयोध्या—फैजाबाद
लखनऊ कार्यालय—
आशियाना चौराहा, एल.डी.ए. कालोनी, सेक्टर एच. कानपुर रोड लखनऊ।
गोरखपुर कार्यालय—
इलाहीबाग गोरखपुर।
मो0 9336715406, 8400925463
ई.मेल **bhartiyabasti@gmail.com**
dainikbhartiyabasti@gmail.com